



मूल्य दो रुपया आठ आना

प्रकाशक—



मुद्रक—
राष्ट्रभाषा मुद्रणालय,
लहरतारा, बनारस।

मेरी कविता की

सबसे बड़ी आलोचिका—

पत्नी को

भेंट !

कुछ कहना है

लिखने के पूर्व कुछ कहने की प्रथा चल पड़ी है। इसीलिए, अनावश्यक ये चंद पंक्तियाँ!

मैं लिखता हूँ—जब बिना लिखे रहा नहीं जाता। दिल की ऐसी ही तिलमिलाहट की देन हैं—ये कविताएँ! जो कुछ देखता हूँ, सुनता हूँ, पढ़ता हूँ—वहीं से गीतों की प्रेरणा लेता हूँ। सम्भव है, मेरे हास्य में वेदना मिले, चुटकियों में चोट मिले, व्यंग्य में नश्तर मिले—पर आपके दिल को दुखाना कवि का उद्देश्य नहीं। इतना अवश्य है कि साहित्य, राजनीति की धोखाधड़ी, बेईमानी, आडम्बर और समाज के फोड़ों पर कवि ने व्यंग के नश्तर का प्रयोग किया है। व्यंग कटु हो सकते हैं पर व्यंगकार का उद्देश्य पवित्र है।

कविताएँ आपको कैसी लगीं?

२ अक्तूबर, १९५५
रामप्रसाद भवन
चेतगंज, बनारस।

—मोहनलाल गुप्त
एम० ए०

संबोधन

बापूके प्रति

चरखेको चूल्हेमें डाला
तकली कूड़ेमें फिंकवा दी।
ड्राइङ्ग रूमके कोनेमें
तस्वीर तुम्हारी लटका दी।

भूल गये हम तुमको बापू
कहनेवाले यह कहते हैं।
सदा अहिंसक भक्त तुम्हारे
इसीलिए सब कुछ सहते हैं।

नाम तुम्हारा लेकर बापू
डूबी नौका पार लगाते।
हारा हुआ चुनाव तुम्हारी
जयके नारे सदा जिताते।

भारतमें तो सब भूखे हैं
कैसे इनकी भूख मिटायें?
भाषण दें, चीखें-चिल्लायें
या खुद ही रोटी बन जायें?

बेचारे दरिद्रनारायण
हरिजन बस आहें भरते हैं।
भैयाजी योजना बनाते
बोलो क्या गुनाह करते हैं!

तुम्हीं बताओ बापू गर हम
थोड़ी रकम बचा लेते हैं।
एम. पी. और मिनिस्टर आखिर
सभी बाल-बच्चोंवाले हैं।

तुम भारतके निर्माता थे
कुछ लोगोंको इसमें शक है।
कहते हैं इतिहास यहाँका
लिखनेका बस हमको हक है।

तुम भारतसे परिचित ही हो
व्यक्ति-व्यक्ति अपना नेता है।
यदि भैयाजी भूले-भटके ही
दो फूल चढ़ा देता है।

इतनेसे सन्तोष करो बस
बापू अब कलियुग आया है।
भारतका कल्याण करेगा
महास्वार्थ, नवयुग आया है।

हे मौलाना !

तुम बुजुर्ग हो, देशभक्त हो हमने तुमको नेता माना
नेहरूकी तुम शेष-बुद्धि, मस्तिष्क पुराना हमने जाना।
लेकिन लिया अकेले शायद तुमने देशभक्तिका ठीका
इसीलिए मन्त्री-मन्दिरमें दिया जलाते हो तुम घीका।
संसदके बाहर-भीतर तुम एक बात अकसर दुहराते
हिंदीवालोंको तुम सेक्यूलर भारतका 'गोडसे' बताते।
एक तुम्हीं बस देशभक्त हो बाकी सब गद्दार बन गये
हम बन गये प्रतिक्रियावादी जबसे तुम 'सरकार' बन गये।
क्या कसूर हिंदीवालोंका जो फाँसीकी सजा सुनाते
अच्छा होता अगर राष्ट्रभाषा हिंदीको नहीं बनाते।
तमिल, तेलुगू, कन्नड़, उर्दू, अरबीको तुम चुनो-चुनाओ
टिम्बक्टू होनोलूलूकी भाषाका पार्सल मँगाओ।
हिंदुस्तानी कलचरका खच्चर 'क्रासब्रीड'की सुन्दर भाषा
सुन्दरलाली नया नमूना 'नया हिंद'का नया तमाशा।
रुपयेकी कुछ कमी नहीं है जिसको जितना जी हो बाँटो
तुम शिबली, जामिया मिल्लियाकी फोटो लेकरके चाटो।
हिंदीका तुम पीछा छोड़ो जी चाहे बोलो अंग्रेजी
किंतु बनाओ मत हिंदी उर्दूका तुम कोरमा-कलेजी।
हम अब भी आदर करते हैं, शीश झुकाते हे मौलाना
लेकिन तुम बच्चों जैसी गालियाँ सुनाते, देते ताना।
यह तो ठीक नहीं है 'भैया' अपनी आदत जरा सुधारो
दाढ़ीके सफेद बालोंको कंघी लेकर जरा सँवारो।

हे प्रकाशक !

(एक लेखककी श्रद्धांजलि)

ज्ञानके, विज्ञानके, अज्ञानके मुद्रक प्रकाशक
बुद्धिके निर्बुद्धि वितरक धन्य हे पत्रक प्रकाशक

दक्ष मच्छर, हे निरक्षर अक्षरोंके रोजगारी
भोजपत्रोंको कुतरकर कागजी संस्कृति प्रसारी।

लोग कहते ज्ञानको, ईमानको तुम बेच खाते
पुस्तकोंकी आड़में अज्ञानको भी बेच लाते।

शारदाके वाहनोंको लक्ष्मीवाहन बनाते
स्वयं गणपति वाहनों-सा भोज खा-खाकर अघाते।

तुम न होते तो न तुलसी, व्यास, कालीदास होते,
लिये खुरपी वाल्मीकी काटते बस घास होते

प्रेमचन्द, प्रसाद अश्रुत, निराला अज्ञात होते,
ताड़पर चढ़ कहीं भैयाजी खुरचते पात होते।

लेखकोंको है सुना सरकार कुछ ईनाम देती
हक तुम्हारा छीनकर वह लेखकोंको बाँट देती।

सरासर अन्याय है यह काम किसका, नाम किसको,
बुद्धि और रुपया तुम्हारा दाम और ईनाम किसको ?

बिना रायल्टी दिये मृत लेखकोंकी चीज छापो,
और जीवितसे कहो अब स्वर्गकी तुम राह नापो।

एक पलमें मूर्खको तुम सहज ही लेखक बनाते
टेक्स्ट बुक लेखक, चरण रजको गगनपर तुम चढ़ाते।

बुद्धिहीनोंको बनाते 'बुद्ध' कहता कौन ठग तुम
चौर्यशास्त्री, गुप्त अगणित संस्करणोंके गणक तुम।

धन्य हे युग देवता, इतिहासके हे महामानव
यन्त्रणाके यन्त्र हो या यांत्रिक तुम महादानव।

हड्डियोंपर है बना साहित्यका प्रासाद सुन्दर
नींवमें लेटा हुआ कवि गा रहा जयगानके स्वर।

हो रहा सन्देह भैया बड़ा लेखक या प्रकाशक,
अर्थहीन विवाद है यह व्यर्थका और समय नाशक।

छोड़ कविता, नीतिका आदर्श, बेचो कामवटिका
ढोंग है साहित्य ढूँढ़ो लक्ष्मीकी पुष्पलतिका।



हे कवयिता !

लिख चुके तुम गीत प्रेयसिके, पियाके गीत
लिख चुके तुम गीत बेगमके, मियांके गीत।
लिख चुके तुम प्यारके तकरारके भी गीत
लिख चुके तुम साड़ियों सलवारके भी गीत।
लिख चुके तुम सालियों ससुरालके भी गीत
श्रीमतीके हार, जंपर, शाल के भी गीत।
लिख चुके तुम तीजके त्योहारके सब गीत
दशहरा, दीपावली—अखबारके सब गीत।
गीत दैनिक, साप्ताहिक गीत संडेके
गीत मुर्गे मुसल्लमके गीत अण्डेके।
गीत लस्सीके, टमाटर सूपके भी गीत
गीत सिनेमा तारिकाके रूपके भी गीत।
गीत कालेज प्रेमियोंकी प्रीतके भी गीत
गीत प्रीति-प्रशस्तिके, नवनीतके भी गीत।
विरहिणीके आँसुओंकी धारके भी गीत
प्रेमियोंकी भेंटके, उपहारके भी गीत।
गीत यौवनके, जवानीके उमड़ते गीत
गीत बुड्ढोंके, लड़कपनके झगड़ते गीत।
लिख चुके तुम विदा अभिनन्दन समर्पण गीत
लिख चुके तुम ब्याह, मुंडन, कर्णछेदन गीत।
लिख चुके तुम बन्दनाके प्रार्थनाके गीत
अब लिखो तुम मिनिस्टर-अभ्यर्थनाके गीत।
अर्थहीन प्रयास हैं ये साधनाके गीत
अर्थमन्त्रीके लिखो आराधनाके गीत।

भैयाजी बनारसीके प्रति

बहुत सुना था नाम तुम्हारा अबतक था दर्शनका प्यासा,
किन्तु देखकर आज तुम्हें भैयाजी सचमुच हुई निराशा।
कवि हो, पर कविसे तुम लगते नहीं यही आश्चर्य परम है,
मुखमें गाली नहीं, जेब खाली, चेहरेपर हया-शरम है।
कवि होते तो केश लटकते, कटिमें एक कमानी होती,
हावभाव हिजड़ोंसे होते आँखें सुरमेदानी होतीं।
खटकिन के-से नखरे होते कविताका तुम धन्धा करते,
चार गीत लिख भैयाजी कविसम्मेलनमें सौदा करते।
या होते आचार्य पीठपर बैठे पान चबाते होते,
गुरुओंके बन गुरू, शिष्य गोरूसे सदा चराते होते।
लिखते सब साहित्य नशेमें, तुम्हें भाँग-बूटीसे नफरत,
गाँजा चरस अफीम मदककी भी तो तुमको नहीं लगी लत।
कविता है बेमजा बीचमें प्यालेका गर दौर नहीं है,
कवि क्या जिसके दिल-कोटरमें लगा प्रेमका बौर नहीं है।
परिचय देते तुम्हें देखकर देवी सरस्वती थर्राती,
देव, बिहारी चिलमें भरते, कालिदास कहलाता नाती।
'मैं हूँ कवि सम्राट मान लो—इसमें कुछ अत्युक्ति नहीं है,
नहीं एक भी वाक्य कि जिसमें प्रेमचन्दकी सूक्ति नहीं है।'
यह सब कुछ भी नहीं अरे तुम 'भैया' कविता करना छोड़ो,
अपनी प्रतिभाकी घोड़ीको अब तुम नयी दिशाको मोड़ो।
जैसे सीधे सादे तुम हो, वैसी ही कविता भी सादी,
ऐसी कविता नहीं चलेगी, भैया जाकर बेचो खादी।
नहीं सादगीका युग भैया सचमुच बड़ा जमाना टेढ़ा,
कविता वे ही कर सकते हैं, लिये साथमें तीतर मेढ़ा।

अपनी कविताके आलोचकके प्रति

यह तो तुम मानोगे ही है गोबर और बुद्धिमें अन्तर,
समझ सकोगे तब तुम मेरी कविता, आलोचक में अन्तर।

काकचंचुसे पीते हो तुम मेरे गीतोंका गङ्गाजल,
बुद्धि विकार दूर हो, मनकी काई फटे, हृदय हो निर्मल।

नाप रहे जिस थर्मामीटरसे मेरी कविताका तुम बल,
नपना है बेकार तुम्हारा भैया यह प्रतिभाका दङ्गल।

तुम गड़हीके गायक दर्दुर, टेर पुरानी, रटे हुए स्वर,
कविता मेरी मलयवायु-सी जैसे नया पहाड़ी निर्झर।

कविता श्वेत कमल है, उसपर काकबीट यह गन्दा मैला,
आलोचककी डीठ—अरे लगता कोई बैठा गोबरैला।

कविता मन विज्ञान नहीं है, नहीं ज्ञान अज्ञेय पनारा,
मानव उरका महोच्छ्वास है, मुक्तहासकी है रसधारा।

कवितामें तुम ढूँढ़ रहे हो स्वाद वादका कोकाकोला,
क्या समझोगे कविता छोड़ो, बेचो जाकर आलू-छोला।



जय लाउडस्पीकर जय हे !

जय लाउडस्पीकर जय हे, भारत भाग्य विधाता !
कवि, लेखक, नेता, मंत्री है तुझको शीश झुकाता।
साधू सन्त, कथावाचक, बस तेरे ही गुन गाता।
गायक, कलाकार, अभिनेता तुझपर फूल चढ़ाता।

सबसे पूजित वंदित नेता, जनता शीश झुकाये।
कवि सम्मेलनके कविजी बैठे देखो मुँहवाये।
तुम प्लेबैक दे रहे कविको कैसा भी वह गाये।
सम्मेलनके प्राण, मौन जब, संयोजक मुरझाये।

तेरी छायामें विकसित सिनेमाके सभी सितारे।
फिल्मोंमें गानेवालोंके स्वर तुमने विस्तारे।
कथा-कीर्तनमें नित कितने गीध-अजामिल तारे।
गीता प्रवचन करें कृष्णजी अर्जुन तेरे सहारे।

तेरे बिना अयोध्या सूनी, सूनी मथुरा-काशी।
तेरे बिना लखनऊ, दिल्लीमें मुर्दनी-उदासी।
सभा और सम्मेलन सूना, साहित्यिक संन्यासी।
तू बीसवीं सदीका नायक स्वरब्रह्म अविनाशी।

जय लाउडस्पीकर जय हे !



डालर वंदना

नभचुंबी लहरोंको लांघा, कोलंबसने पता लगाया।
सप्तसिंधु मंथन करनेपर भैयाजीने तुमको पाया।

हबशी बने गुलाम और फिर गोरोंके तो भाग जग गये।
मंजिल मिली और मंजिलपर मंजिलके अंबार लग गये।

महातोंदमें लुप्त हो गया दुनियाभरका चाँदी-सोना।
महापाशमें डालरके बंध गया विश्वका कोना-कोना।

एक हाथ यूरोपपर फैला दूजेमें एशिया आ गया।
डालरका यह धूम्रकेतु है दुनियाभरपर आज छा गया।

एक हाथमें हाइड्रोजन बम और दूसरेमें एटम बम।
आज विश्वमें रूप चतुर्भुज डालरजीका बना महत्तम।

पृथ्वीको कर विजित चन्द्र-मंगल जानेकी है तैयारी।
मुट्ठीभर मिट्टीके मालिकको 'यह प्रभुताकी बीमारी।

मानव कितना ही विराट हो, पा जाये कितना ही वैभव।
नभचुंबी भूपर आयेगा, शेष रहेगा केवल मानव।

जय डालर देवता तुम्हारी जय हे पूँजी महापुजारी।
साढ़ेसाती नमस्कार करती है यह लेखनी हमारी।



एटम बमके प्रति*

'भैया' बड़े समयसे आये।
महायुद्धसे ऊब गये थे हम सब हिन्दुस्तानी,
मित्र राष्ट्र भी परीशान थे—थके हुए जापानी,
प्रबल प्रतीक्षा कर हारा हिटलरने लम्बी तानी,
स्टालिनकी आशापर तो फेरा तुमने पानी।
महा भयंकर रूप तुम्हारा—महा शांति ले आये।
भैया बड़े समयसे आये।

महा शांतिके हो प्रसाद पर हो तुम बड़े भयंकर,
शंकरके तीसरे नेत्र हो—खुलते ही प्रलयंकर,
एटम बम तो नाम गलत है, तुम पूरे बम शंकर,
हिरोहितोपर दया करो—लो हाथ थाम हे शंकर।
देखो, देख रहे हैं तुमको जापानी मुँह बाये।
भैया बड़े समयसे आये।

---

* हिरोशिमामें फूटनेवाले प्रथम एटम बमके प्रति।

कोई कहता है तुम हिटलरके दिमागके धागे,
कोई कहता संग यहूदीके बर्लिनसे भागे,
चर्चिलके सिगारसे पैदा हो जब आये आगे,
हिटलरके बमने दौड़ाया तुम लन्दनसे भागे।
तुम्हें ट्रूमनने पाला-पोसा तुम उनके हो जाये।
भैया बड़े समयसे आये।

हिरोशिमापर तुम जा टपके कर पूरी तैयारी,
तुम्हें देख जापानी दहले, जीती बाजी हारी,
छाया है आतंक तुम्हारा 'भैयाजी' पर भारी,
हिरोहितो भी प्रस्तुत है करनेको 'हाराकारी'।
शक्ति-प्रदर्शनकर तुम अपना मन ही मन हर्षाये।
भैया बड़े समयसे आये।

टोरी कहते 'साम्यवाद'की अब आयेगी बारी,
चर्चिल बजा रहे हैं घण्टा—दोनों हाथों तारी,
काशीके पण्डित कहते–तुम कलियुगके अवतारी,
महाप्रलयका शंख फूँक करने आये बमबारी।
भारतवासी करो कीर्त्तन बम तो आये-जाये।
भैया बड़े समयसे आये।

देखी तुम्हरी दिल्ली बाबा !

कठपुतलीसे चालित हैं नर, जापानी गुड़ियों-सी नारी,
भैयाजी दिल्लीमें कैसी भाग-दौड़की यह बीमारी ?
बस, ट्रामोंमें और सड़कोंपर गूँज रहा है एक यही स्वर,
जीवनकी बस एक दैनिकी—घरसे दफ्तर, दफ्तरसे घर।
देखी तुम्हरी दिल्ली बाबा !

उदरपूर्तिके महायज्ञकी पूरक महायन्त्र-सी दिल्ली,
मानवरूपी कल-पुरजोंसे निर्मित महामन्त्र-सी दिल्ली।
दौड़ रहे निष्प्राण मूर्तिवत् क्षणभरको आराम नहीं है,
मानवताका नाम नहीं है, यहाँ हृदयका काम नहीं है।
देखी तुम्हरी दिल्ली बाबा !

दिल्लीका देवता स्वार्थ है—सभी स्वयंसेवामें हैं रत,
अपनी बीवी, अपने बच्चे पर-चिन्तनकी किसको फुरसत !
सेवाका मतलब मेवा, नित नूतन साइनबोर्ड लगाते,
देशभक्तिकी हाट लगी है सभी एकके चार बनाते।
देखी तुम्हरी दिल्ली बाबा !

गली-गली स्कूल खुले हैं चौराहेपर कालेज कोटर,
बिना पढ़े जो पास करायें ऐसे हैं आचार्य प्रभाकर।
ट्यूशन भिक्षा, सस्ती शिक्षा, दिल्लीका प्रयोग अभिनव है,
नहीं परीक्षाका भय भैया शिक्षाका यह सुखद प्रसव है।
देखी तुम्हरी दिल्ली बाबा!

कृषक-वेश भारतका भैया कहते हैं यह हृदयदेश है,
भैयाजीने देखा तो यह पापा-मामाका प्रदेश है।
सूट-बूट टाईके अन्दर करते बन्दर-गिटपिट टाटा,
भारतीय भारतके मुखपर दिल्ली एक पश्चिमी चाँटा।
देखी तुम्हरी दिल्ली बाबा!

पढ़ा किताबोंमें कि सदासे दिल्लीपर होता है हमला,
अभी नहीं टूटी परम्परा होता है हमलेपर हमला।
पंजाबी लस्सीका हमला, बङ्गाली मच्छीका हमला,
उत्तरपर दक्षिणका हमला, दोसा और इडलीका हमला।
देखी तुम्हरी दिल्ली बाबा!

सचिवालयमें चले जाइये होता तमिलनाडका है भ्रम,
मद्रासी बाबू करते अँग्रेजीमें हिन्दीका 'वेलकम'।
समझा भैया दिल्लीमें क्यों हिन्दीका विरोध होता है,
अपने घरमें चादर ताने हिन्दीका प्रदेश सोता है!
देखी तुम्हरी दिल्ली बाबा!

बड़े नाजसे पाली पण्डित नेहरूकी रजधानी दिल्ली,
खूब घूम-फिरकर देखा भैया तेरी दीवानी दिल्ली।
अँग्रेजोंकी परित्यक्ता-सी, अँग्रेजीका बण्डल दिल्ली,
भारत नहीं, इण्डियाकी है सुन्दर नयी कैपिटल दिल्ली।
देखी तुम्हरी दिल्ली बाबा!

सुन्दर पर निर्जीव इमारत लगती जैसे मुरदाघर हैं,
यह भारतका देश नहीं है—लंदन या न्यूयार्क नगर हैं।
पृष्ठ पुराने फाड़ विदेशी कोई नव इतिहास लिख रहा,
बड़ी प्रगति की तुमने दिल्ली पर पहलेकी बात अब कहाँ?
देखी तुम्हरी दिल्ली बाबा!

अलग-अलग सब प्रांत यहाँपर—
हुआ विभाजन अभी नहीं कम,
बेचारा भारत रोता है हुआ हृदयका पोस्टमार्टम।
उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम अलग-अलग है सबकी दिल्ली,
दिल्लीको भारती बनाओ तभी टिक सकेगी यह दिल्ली।
देखी तुम्हरी दिल्ली बाबा!

तुम भैया बतरसके प्रेमी, गप्प लड़ानेकी तुमको लत,
पर इतना अवकाश कहाँ है? बातोंकी है किसको फुरसत।
लगता है जैसे कोई इस दिल्लीमें बेकार नहीं है,
भैयाजी दिल्लीमें रहनेका तुमको अधिकार नहीं है।

राजनीतिक

दिल्लीके देवता

दिल्लीके देवता अधिक मत नभकी घास चरो,
गगनविहारीजी अब तो तुम धरतीपर उतरो।

नेताजी आकाशबेलि तुम कबतक बने रहोगे,
चरण-कमल धूलिमें उतारो, नया दृश्य देखोगे।

तुम 'पुष्पक'पर उड़ते-फिरते, चरण पड़े कब भूपर?
उच्च मंचसे भाषण करते ले लाउडस्पीकर।

अपनी ही प्रतिध्वनि सुनते हो कभी न सुनते जन-स्वर
भैयाजी तो देख रहे नेता जनताका अन्तर।

आसमानके सायबानके नीचे कुछ रहते हैं,
हड़कँपी जाड़ा बरखा, ये सब कुछ तो सहते हैं।

खाते हैं बादाम-पाग क्या नंगे ये रहते हैं?
नहीं-नहीं, भूखे-नंगे ये बिना जिये मरते हैं।

पुष्पक छोड़ो, भूपर उतरो, पैदल जरा चलो,
अरे मंचसे नीचे उतरो इनसे गले मिलो।

खिसक रही है ईंट नींवकी ज्यादा मत उछलो,
छोड़ पुराना ढाँचा, इस साँचेमें जरा ढलो।



तुम नेतृत्व करो नेता का

तुम्हें बनाकर सीढ़ी कल जो किले-बुर्जपर जाकर बैठे
सीढ़ीको तो लात मार दी खुद कुरसीपर मूँछे ऐंठे।

स्वर बदला और चेहरा बदला परिचय भी अब भार बन गया।
जनता पिछड़ गयी पीछे है नेता मोटरकार बन गया।

'मूर्ख अशिक्षित बेईमान सब गाँवोंकी जनता गँवार है'
सदा सुरक्षित लाउडस्पीकर नेताका सर्वाधिकार है।

चिथड़े तनपर, भूख दबाये साँस-साँस पीती है पीड़ा।
यह जनताका चित्र और नेता करता है कौतुक-क्रीड़ा।

कबतक भूखा भूख दबाये कबतक चिथड़ा शर्म छुपाये?
भैयाजीको भय है कि यह चिनगारी बन आग न जाये।

आग लगे तो ध्रुपद अलापे औ अकालमें दावतं खाये।
तुम नेतृत्व करो नेताका जब वह अपनी मौत बुलाये।



योजनाएं

नित नया सूबा, नये मन्त्री, नया कर,
नित नयी स्कीम, नव पद, नये अफसर !

नित नया वक्तव्य, नूतन योजनाएँ,
क्यों न भैयाजी नयी कविता बनायें !

आप बेघर हैं अगर हैं परेशान,
तो मँगायेंगे हम लन्दनसे मकान !

आप भूखे हैं जो चाहे रोटी-साग,
हम बनायें सिंदरीमें नया खाद !

आप हैं बेकार रुकिये पाँच साल,
कर दिखायें देखिये क्या-क्या कमाल !

सैकड़ों, लाखों, करोड़ो योजनाएँ,
माँगता भोजन, हैं मिलती योजनाएँ !



योजना-निर्माण फिर-फिर

भूमिकी ये योजनाएँ, खादकी ये योजनाएँ।
आजसे दो-तीन पीढ़ी बादकी ये योजनाएँ।
है लगी जो प्यास तो नलकूपकी ये योजनाएँ।
है लगी जो भूख तो कृषि-कूपकी ये योजनाएँ।
हैं नहीं कपड़ा बनाते सूतकी कुछ योजनाएँ।
हैं नहीं खाना बनाते बेतुकी कुछ योजनाएँ।
काम या धन्धा नहीं है हम बनाते योजनाएँ।
काम यह गन्दा नहीं है हम बनाते योजनाएँ।
योजनासे बुद्धि बढ़ती, खोजकी हैं योजनाएँ।
योजनासे बनी रोजी रोजकी हैं योजनाएँ।
निकलता चाहे दिवाला दीर्घसूत्री योजनाएँ।
है अजब गड़बड़घुटाला योजनाएँ-योजनाएँ।
पासमें पैसा नहीं है इसलिए ये योजनाएँ।
हम बनाएँ—हों न पूरी—या अधूरी योजनाएँ।
कागजी माता, पिता पार्कर, निराली योजनाएँ।
खूब है मस्तिष्क खाली और खाली योजनाएँ।
योजना जब पूर्ण होगी स्वर्ण उगलेगी धरा यह।
और तब तक योजनासे पेट भैयाका भरा यह।



कर लगाओ

भैयाजी सरकारके कुछ गीत गाओ।
और जनताको खरी-खोटी सुनाओ।
मूर्ख, अनपढ़, बेअकल—क्या करे बात,
एक अन्धी भीड़, भेड़ोंकी जमात।

कहनेको, गिननेको ये चालीस करोड़,
रेसमें लेते मगर अन्धोंसे होड़।
बेपढ़े सब तो इन्हें कैसे पढ़ायें,
हैं सभी बेघर, कहाँसे घर मँगायें।

जब सभी भूखे कहाँसे रोटी आये,
है कोई, सरकारको रस्ता बताये?
सैकड़ों गुत्थी हजारों समस्याएँ,
इसलिए मन्त्री बनाते योजनाएँ।

पानीसे बिजली, हवापर बाँध, सुंदर,
घाससे घी, सूर्यचूल्हा, पेड़पर घर।
ये हवाई स्वर्ग-सुन्दर योजनाएँ
फिर न क्यों सरकार हमपर कर लगाये?

भूमिपर कर, हवापर, आवासपर कर,
जन्मपर कर, मृत्यु कर, हर साँसपर कर।
दालपर कर, भातपर, हर बातपर कर,
घासपर कर, पेड़के हर पातपर कर,

जियो जबतक बस चुकाते चलो सब कर,
मरनेके पहले चुकाओ मौतका कर।
जनताकी ही पीठपर आसन जमाकर,
वे बढ़ाते जा रहे हैं नित नया कर।

भैयाजी सरकारकी डफली बजाओ,
'कर लगाओ, कर लगाओ, कर लगाओ'।



मंत्रीका दौरा

मंत्रीजी करते हैं दौरा देखिये
आइये दौरेका ब्यौरा देखिये।

साथमें लेकरके चलते हैं हजूम
जो भी करता बात है बस दामनचूम।

जिस गलीसे निकल जाये यह जुलूस
देखनेको निकल आये बिलसे मूस।

मंत्रीजीका पी० ए० लो पहले चला
पीछे-पीछे मन्त्रीजीका काफिला।

इन पुछल्लोंकी भी किस्मे देखिये
और फिर इनके करिश्मे देखिये।

लाला लल्लूलालके घर दोपहर
रात खाना मुंशी मल्लूमलके घर।

बकरम खाँने है बुलाया चायपर
प्रति दिवस जूठन गिराते चार घर।

एक कप पी चाय तो टी पार्टी
पार्टी मजबूत करती पार्टी?

खा लिया दो कौर, तो 'एट होम' है
हर्ष पुलकित सेठका प्रति लोम है।

मंत्रीके मुखकी महत्ता देखिये
भैयाजी भोजनकी सत्ता देखिये।

नमकका एहसान होता है बड़ा
एक डलीपर तीसरा मंजिल खड़ा।

मन्त्रीजी हँस फेरते हैं ऐसे हाथ
जैसे हों साक्षात् बाबा गोरखनाथ।

मंत्रीजीने दर्जनों दौरे किये
भोपुत्र्योंपर सैकड़ों भाषण दिये।

दावतोंमें हेल्थ कंट्रीका पिया
होटल और सिनेमाका उद्घाटन किया।

देशसेवा, देशचिंतन—यही साथी
हो गये घुल-घुलके मन्त्री सगी हाथी।

फोटो लेकर छापता अखबार है
देशसेवा भी अजब व्यापार है।

रो रही जनता तो रोने दीजिये
आ रही है नींद सोने दीजिये।



आजादी

यह भारत है—भिखमंगोंको भूखों मरने की आजादी।
कपड़े की है नहीं जरूरत—नंगे फिरनेकी आजादी॥
नेता, मिनिस्टरोंको गिन-गिन दावत खानेकी आजादी।
फलाहार, व्रत, उपवासोंकी बात बनानेकी आजादी॥

जनताको गल्ले-कपड़ेका राशन पानेकी आजादी।
कभी-कभी बस दूकानोंपर धक्का खानेकी आजादी॥
खद्दरधारी नेताको अपना घर भरनेकी आजादी।
लाइसेंस-परमिटकी खेती जीभर चरनेकी आजादी॥

त्यागमूर्ति श्री नेताजीको ह्विस्की पीनेकी आजादी।
ये स्वराज के बन्दी—इनको मरने-जीनेकी आजादी॥
जनताकी सेवाका खुद ही मेवा खानेकी आजादी।
'जाओ जहन्नुम', सबको अपने रास्ते जानेकी आजादी॥

चोर-गिरहकट-सहकारी संघ—रकम काटनेकी आजादी।
खूब मुनाफा खाने-पीने और बाँटनेकी आजादी॥
गहरी रकम देख घड़ियालोंको मुँह बानेकी आजादी।
रामराजमें गबन नहीं है जुर्म उड़ानेकी आजादी॥

चोरबाजारी राष्ट्रधर्म है जनगन गानेकी आजादी।
घरमें नजर और दफ्तरमें घूस पचानेकी आजादी॥
एक सालमें ही अफसरको घर बनवानेकी आजादी।
नयी कार, प्रेयसी नयी ले मौज उड़ानेकी आजादी॥

सेठ करोड़ीमल को पूरी तोंद बढ़ानेकी आजादी।
अपना इनकमटैक्स इन्हें ही आप बनानेकी आजादी॥
हड़तालोंकी धमकी देकर रकम कमानेकी आजादी।
यह समाजवादी टट्टी है और कमानेकी आजादी॥

अरे पुलिसको चोर जुआरी मित्र बनानेकी आजादी।
थानेदार इन्द्र, थानेको हरम बनानेकी आजदी॥
अरे किसीकी बीबी अपने घर ले जानेकी आजादी।
राह-बाट सुन्दर औरत हो उसे उड़ानेकी आजादी॥

ऐसा स्वर्ग कहीं देखा है, अरे कहीं ऐसी आजादी।
पंडितजी कानोंमें बोले अरे यही असली आजादी॥



भैया यह तो रामराज है

रामराजमें हनूमानजी हाकिम, बानरको स्वराज है।
खुली लूटकी छूट, कौन रोके, इनका ही तख्त-ताज है।
खाओ जीभर हिंद बगीची अपनी ही—यह राजकाज है।
करने दो उपवास नरोंको वानर-भोजन श्रेष्ठ आज है।
हो अकाल हमसे क्या यदि घरमें खानेको नहीं नाज है।
बैठ रसाल-कुंजमें करते फलाहार—दावत सुकाज है।
मुँह खोले बस निगल रहे हैं खुली मेजकी ज्यों दराज है।
डोलें भूखे वसनहीन नर, पर वानर तो महाराज है।
डाल-डालपर बैठे बानर काँग्रेस भी वृक्षराज है।
महासमितिकी बैठकमें लड़ते हैं—इनको कहाँ लाज है।
हुई किसीको जिह्वा-खुजली, हुआ किसीके गले खाज है।
चीख-पुकार-शोरमें लय हो जाती जनजनकी आवाज है।
कूद डालसे पड़े बड़े दो बन्दर जैसे गिरी गाज है।
फुनगीसे वानरपति बोले—भैया यह तो रामराज है।



भूख और नशा

नशानिषेध स्वप्न बापूका पर देखो ये मन्त्री राजा
पिला रहे हैं सरकारी फारमका सबको बढ़िया गाँजा।
गाँजा पियो, भङ्ग खाओ, भैयाजी वारुनिके गुन गाओ
घास विटामिन युक्त, वनस्पति वैज्ञानिक है जीभर खाओ।
दूध-दही, घी नाम न लेना, नामशेष है बस केवल छल
गाँजा, भाँग, सुराको समझो रामराजके पेय, महाफल।
नशा, होशका यदि अभाव है तो जनताका रोष सही है
भूखी जनता शोर कर रही है तो जनताका दोष नहीं है।
कैसी हो सरकार नशा ही भूख-प्यासकी एक दवा है
बड़ा-बड़ा विद्रोह नशेके आगे भैया तुरत हवा है।
जनताको बेहोश बना दो शासनका सब कार्य सरल हैं
सस्ती दूकानें खुलवा दो यह चुनावका विजय तरल है।
भूखे भारतकी भैयाजी एकमात्र औषधि है गाँजा
कवि, प्रेमीकी, कलाकारकी एकमात्र विस्मृति है गाँजा।
उधर नयी गाँजेकी खेती, इधर नशेबन्दीकी गीता
बन्द करो मुँह सुनो ध्यानसे रामराजकी कथा पुनीता।
भैयाजी बक रहे नशेमें, करो होशकी अब कुछ बातें
मन्त्री जो कुछ भी करते हैं उसमें दोष नहीं हम पाते।



जो नहीं बदले !

बदले चाँद-सितारे, बदली नक्षत्रों की भाषा
दुनिया बदली, फिल्में बदल रहीं जीवन परिभाषा।

राजनीति बदली, बदले भारतके भाग्य-विधाता,
जमींदार भूदानी, पूँजीपति सम्पत्ति प्रदाता।

नेता बदले, मिनिस्टरीमें फेंक रहे हैं पाशा,
नये-नये दल, नये-नये नेता नित नया तमाशा।

भारतमें सुराज है सबको करनेकी मनमानी,
हड़तालीजी जेब भर रहे, भैया भरते पानी।

ब्लाउज छोटे हुए, और बुशशर्ट गये ब्लाउज बन,
भारत बदला, भाषा बदली, बदल रहे हैं फैशन।

भारतके नकली अंग्रेजोंकी भाषा अब हिंदी,
मेमें लगा रहीं लिपस्टिकसे सुहागकी बिंदी।

दुनिया बदल गयी भैयाजी, किंतु न बदले ये नर,
ये सरकारी अफसर, इनकी भाषा, इनके दफ्तर।

कुरसीपर अकड़े बैठे दुनिया है शीश झुकाती,
समझ रहे अपनेको जैसे बड़े लाटका नाती।

अगर पुरुष तो 'साला' कहते, स्त्री हो तो 'साली',
ऐसे प्रिय सम्बोधनको भेया तुम कहते गाली।

मानुष-वनमानुषमें भैया ढूँढ़ रहे हैं अन्तर,
भाई-भाई सरकारी अफसर और आदिम बन्दर।

पापा, मामा, टाटा !

देश इंडिया, भाषा इंगलिश हम सब इंगलिस्तानी,
नेहरूजीकी नयी इंडिया सचमुच है लासानी।
नयी देहली, दरवाजेसे निकली नयी सवारी,
दिल्लीसे लंदन जानेकी पूरी है तैयारी।
बाबू, अम्माको पुकारते हैं हम 'पापा' 'मामा',
कोट-पैंटके आगे झख मारे धोती-पाजामा।
मुन्नीको हम 'बेबी' कहते मुन्नाको हम 'बाबा',
कौन कहे जयहिंद नमस्ते—चलता 'डैडी-टा-टा'।
हिंदी भाषा, धोती-संस्कृति छोड़ो बात पुरानी,
यह दोनों तो केवल हिंदूकी हैं बनी निशानी।
कौन समझता है हिंदीको, हिंदी तो है पाली,
हिंदी कविता बन्द करो, दो अंग्रेजीमें गाली।
नयी-नयी दिल्लीकी भैया नयी-नयी हैं बातें,
सचमुच वे हैं मूर्ख आज जो खंडहरका गुन गाते।
नया राष्ट्र है नयी संस्कृति, नया-नया है खाता,
उपनिवेश 'डैडी मम्मी'का 'पापा-मामा-टाटा'।



भैयाजी रूस चलो, भैयाजी चीन चलो !

मिलने लगा है रूस-चीनसे वजीफा
भारतपर खुश हैं मार्क्सवादके खलीफा,
जा रहा है मक्काको कारवाँपर कारवाँ !
भैयाजी रूस चलो, भैयाजी चीन चलो !

'फ्री एयर पैसैज' है, काकटेल पारटी,
मुरगोंके दुमकी उतारें क्यों न आरती ।
वाडका का कारस है लाल जमीं-आसमां
भैयाजी रूस चलो, भैयाजी चीन चलो !

चाहे तुम तबलचीं हो, ढोलकी, बजनिया,
कलमके कसरती हो चाहे हो नचनियाँ,
कला-केन्द्र मास्को है, पेकिंगमें इम्तहाँ !
भैयाजी रूस चलो, भैयाजी चीन चलो !

भारतमें बसते मूर्ख, फैला अज्ञान है,
बांचते रमायन, चबाते खूब पान हैं !
भारतके बाहर है असली हिन्दोस्तां
भैयाजी रूस चलो, भैयाजी चीन चलो !

जाते थे पहले यही लन्दन, अमरीका,
डालर-स्टर्लिंगका स्वाद पड़ा फीका ।

रूबल और येनने अब बाँध दिया है समाँ।
भैयाजी रूस चलो, भैयाजी चीन चलो।

गाँधीने भारतका सचमुच किया नाश?
मास्कोमें लिखा जा रहा है नया इतिहास।

क्रांति 'इम्पोर्ट' करो, लाल फहरे निशाँ।
भैयाजी रूस चलो, भैयाजी चीन चलो।

भारतीय भूख है औ मास्कोका नुसखा,
समझमें न आवे माया कैसी यह हे सखा?

वाडकाकी बोतल है, भूखा हिन्दोस्ताँ।
भैयाजी रूस चलो, भैयाजी चीन चलो।

नेताकी भूख तो मिटाती हैं दावतें,
दावत लो भैया क्यों लेते अदावतें।

'निकले गद्दार महा'—भैयाजी बेज़ुबाँ।
भैयाजी रूस चलो, भैयाजी चीन चलो।

नये डेलिगेशनमें भैया गर जायेंगे,
सवा सेर लड्डू हनुमानको चढ़ायेंगे।

लौटकर लिखेंगे रूस-चीन स्वर्गके समान।
भैयाजी रूस चलो, भैयाजी चीन चलो।

धोती मत पहनो, मत पहनो !

तुम पतलून सिलाओ जाकर या पहनो पाजामा,
चाहे लुंगी लटकाकर तुम बनो दलाई लामा।
खादी महँगी है तो तुम सिलवा लो एक लंगोटी,
मगर भूलकर भी भैयाजी मत पहनो तुम धोती।

शार्कस्किनके सूट पहनते सचिवालयके बाबू,
हमसे कहते खादी पहनो, है दिमाग बेकाबू।
मिलका है गोदाम भर गया—इसको भेजो बाहर
भैयाजीसे कह दो चरखा कातें, पहने खद्दर।

दिल्लीका यह 'क्रासवर्ड' भैयाजी समझ न पाते,
बैठ कुतुबपर मन्त्री नित नूतन कानून बनाते।
मिल मालिकके बने पहरुआ, जनताको भरमाते,
दिल्लीके दिमागका भैया आँख मूँद यश गाते।



हिन्दी मत लादो, मत लादो !

गोरे अंग्रेजोंको हमने मस्तकपर बैठाया,
गोरी अंग्रेजीको हमने सादर कंठ लगाया,
देश इंडिया, भाषा इंगलिश, लार्ड नेहरू गादो !
हिन्दी मत लादो, मत लादो !

अंग्रेजी मेमोंकी भाषा बड़े नाजकी पाली
बड़े प्रेमसे सुनते भैया अंग्रेजीमें गाली
नाम लिया हिंदीका तो दोलत्ती उसे लगा दो !
हिन्दी मत लादो, मत लादो !

सचिवालयको भैयाजी तुमने भी क्या समझा है ?
लाद रहे भाषाकी लादी जैसे कि गदहा है।
अंग्रेजी नेकटाई, हिन्दीकी घंटी लटका दो !
हिन्दी मत लादो, मत लादो !

'खोद्दा-सातूखोर' और कुछ दरबानोंकी भाषा।
इसे राष्ट्रभाषाका पद दे अच्छा किया तमाशा।
कभी न बोलें हम तो हिन्दी गूँगा हमें बना दो !
हिन्दी मत लादो, मत लादो !

मुंशी और नेहरूजीकी प्रेयसि है अंग्रेजी।
एक ओर हिन्दीका सतुआ दूसरी ओर कलेजी।
हिन्दीके भकुओंको भैया अंग्रेजी सिखला दो !
हिन्दी मत लादो, मत लादो !



साहित्यिक

राजकवि

अखबारोंमें कल देखा था छपा राजकविका विज्ञापन
मुखमें भर आया गंगाजल, भेज दिया लिखकर आवेदन।

भैयाजी हो रहे आजसे कवि सरकारी, कवि दरबारी
हो जाये नियुक्ति तो भैया मंत्री-चरण-कमल बलिहारी।

खाते कसम लेखनी छूकर नहीं करेंगे मन्त्री-टीका
मन्त्री-महाकाव्य लिखकर बस हलका भार करेंगे जीका।

भैयाकी योग्यता एक बस कुछ तुकबंदी कर लेते हैं,
शब्द शुद्ध, मस्तिष्क शुद्ध अपशब्द नहीं देते-लेते हैं।

सबको मिला ईनाम मगर केवल भैयाजी ही अपुरस्कृत,
वालंटियर गवर्नर बन गये, भैयाजी हो रहे तिरस्कृत।

राजनीति-साहित्य-क्षेत्रमें सेवाव्रत ले, जंतर लटका,
सभी दाल-बाटीका :अपने बना रहे पेटेंट नुसखा।

कुंठित बुद्धि, पेंशनर दिल ले, घिसी लेखनी, कंठीमाला,
भैयाजी अवकाश ग्रहणकर बनो राजकवि ओढ़ दुशाला।



भोजपुरीका प्रांत बनाओ !

नेताजी बोले पहाड़से नये-नये कुछ प्रांत बनाओ।
इनमें भोजपुरी भी हो भैया कुछ ऐसी जुगत लगाओ।
यदि भविष्यकी चिंता है तो पहलेसे योजना बनाओ।
अगर मुख्य मन्त्री बनना हो भैया नूतन प्रांत बनाओ।
भैया लो अब भोजपुरीकी ढोलक कंधेसे लटकाओ।
चेलोंसे कह दो डफ-डफली अपनी-अपनी अलग बजाओ।
भोजपुरीका प्रांत अलग है बसते कुछ विद्वान अधिक हैं।
सबके सब भाषाके पण्डित राजनीतिका ज्ञान अधिक है।
अरे नापकर नेताओंने देखी इसकी सीमा-रेखा।
भारतमें दुनियाभरमें यह साफ अलग है सबने देखा।
भोजपुरी है प्रांत, प्रांतकी मीठी मधुर-मधुर है भाषा।
हिंदी-हिंदी बहुत कर चुके बन्द करो बन्दरी तमाशा।
ब्रजभाषामें भाखो चाहे अवधीकी बोलो चौपाई।
मैथिल भनो, बुँदेली बूको चाहे डिंगल करो पढ़ाई।
हिंदीमें क्या धरा बाग यह भोजपुरीका हरा-भरा है।
सर्वप्रथम भैया तुमने इस चरागाहमें पैर धरा है।
भोजपुरीमें लिखो महाभारत नूतन रामायण, गीता।
भोजपुरीमें क्या न मिलेंगे राम-कृष्ण, रावन औ सीता।
सचिवालयमें ढोलक लेकर, मन्त्री गायेंगे अब रसिया।
भैयाजी अब भख मारेंगे शिक्षामन्त्री बना विदेशिया।

× × ×

जो जीमें आता कह जाते एक यही बस बात बुरी है।
भैयाजी बनारसी, ना, ना, भैयाजी अब भोजपुरी है।



नयी कविता

(समीक्षा)

केचुएकी टाँग है या मुर्गियोंकी बांग,
रंडियोंकी मांगके सिन्दूरका सा स्वांग।
पागलोंका ज्ञान है या दार्शनिक अज्ञान,
रेंड़का उद्यान है या खेलका मैदान।

ऊँटकी है बलबलाहट गर्दभोंका नाद,
नींदकी है बौखलाहट, स्वप्नका संवाद।
हृदयकी खुजली नहीं मस्तिष्कका है दाद,
कविताका 'सैम्पुल' नया 'मेड इन इलाहाबाद'।

प्रसव-पीड़ासे दुखी हैं काव्यके ये बाँझ,
बजे बारह दोपहरके—उतर आयी साँझ।
रेस्टरां साहित्य है या चायका संगीत,
आरकेष्ट्रा भोंपुओंका, कुकुरमुत्ता गीत।

यह नशेका ज्ञान है, बेहोशका है होश,
दौरका यह 'और' है या पेंसिलिनका जोश।
समझमें आये न उसकी समझका है दोष,
खोपड़ीमें खाद डालो काव्य है निर्दोष।

पीत ज्वर है, शीत ज्वर है या कि कालाजार ?
हो गया सरसाम लो साहित्य है बीमार,
डाक्टरी बेकार सारी मत करो तुम शोर,
नयी कविता रोगका बस एक 'नेचर क्योर' ?

पैरोडीकी पेरोडा है काव्यका क्या काम,
नामको कविता, हो चरचा, बस यही ईनाम।
नाम होगा चाहे तुम कितना करो बदनाम,
खुल गयी है फैक्टरी औ घट गया है दाम।

चारपाईपर लिखी है सिर्फ लाइन चार,
ले उड़े कुछ दोस्त उसको हवामें बेतार।
सुना है भैयाजी तुम हो आजकल बेकार,
नयी कविताका ले चूरन करो बस परचार।

नयी नायिका

[नखशिख]

गाल गोलगप्पेसे, 'ग्लूकोज डी' हैं अधर तुम्हारे।
गोरिल्ला माऊ-माऊसे काले केश तुम्हारे।
दन्त पांत या कांग्रेसी जमात है खादीधारी।
भौंहें सी० आई० डी०, आँखें कलमतराश तुम्हारी।
कण्ठ सरस है जैसे पौढ़ेकी हो मधुर गड़ेरी।
मुग्ध लता मंगेश्कर आकर देती सो-सौ फेरी।
'स्काई स्क्रेपर' सी है ऊँची नाक तुम्हारी।
कान रेडियो सेट हैं, चोटी है तलवार दुधारी।
पूर्व-पश्चिमी पाक-खण्डसे सजे उरोज तुम्हारे।
चर्चिलके सिगार-सी अँगुलियाँ, नख प्यारे-प्यारे।
दिल है शांति कबूतर, एटम बम है नजर तुम्हारी।
और तुम्हारा गुस्सा 'हाइड्रोजन बम' से भी भारी।
नेहरूकी परराष्ट्रनीति-सी पतली हुई कमर है।
करमें लटका यू० एन० ओ० सा हैंडबेग सुन्दर है।
मिनिस्टरोंकी मोटर-सी है मनहर चाल तुम्हारी।
मुगल गार्डेन दिल्लीका है या तुम पहने सारी।
देवि तुम्हारा रूप कला-कविताका स्रोत बना है।
तुम आदिम अणुशक्ति और भैयाजी तो अदना है।

प्रेयसीवाद

सबसे सुघर प्रेयसी कविकी, रूप अकल्पित मधुर कल्पना,
जिसके चेहरेको निहार कागजपर रचते नयी अल्पना।
नूतन नित्य प्रयोग, प्रेयसी नयी, प्रेमकी अमिट पिपासा,
हाथ पारकर, दिलके टुकड़े गिरे जमींपर, अजब तमाशा।
लेखककी प्रेयसी लेखिका बिना कहे ही है बन जाती,
लेखकजी परदेमें रहते और लेखिका नाम कमाती।
बिना प्रेमके पत्रकारकी कलम लड़खड़ाती चलती है,
प्रिय छविका स्पर्श मिल गया, फौरन विद्युतगति भरती है।
प्रोफेसर प्रेयसी छात्राको नव चारागाह चराते,
बायरन, शेली, कीट्स पढ़ाते, प्रथम सेवका स्वाद चखाते।
मास्टर साहब ट्यूशन करते, बिटिया फिल्मी गीतें गाती,
पहले पाठ खतमकर शिष्या प्रिया और प्यारी बन जाती।
नेताकी प्रेयसी साथ रह खुद भी नेता बन जायेगी,
और एक दिन निश्चित ही एम० पी०, एम० एल० ए० कहलायेगी।
मन्त्रीकी प्रेयसी अगर हो, पाँचो घीमें, क्या कहना है!
सचिवालयमें रोब, साथ दौरेपर, दिल्लीमें रहना है।
सुन्दर प्रेयसिका स्वरूप हो, छाया इठलाये दर्पणमें,
तुरत राजदूती बन जाये, टिम्बकटूमें या कैण्टनमें।
डाक्टरकी प्रेयसी नर्स है, हृदय हर्षसे भरा रहेगा,
दोनों पेशेवर प्रेमी, दिल इन्जेक्शनसे हरा रहेगा।
बिना प्रेयसीके ही तुम कैसे कवि, लेखक, पत्रकार हो,
पत्नीमें प्रेरणा ढूँढ़ते—भैया तुम सचमुच गँवार हो।
तुम पत्नीवादी भैयाजी, तुमने जीवन व्यर्थ गँवाया,
यह नूतन प्रेयसीवाद है, नये काव्यकी अमिट छाया।

बही पुरवैया रे !

बहने लगी है लोकगीतोंकी गङ्गा रे !
पहनके लंगोट कूद पड़ो, चाहे नङ्गा रे
गूँज उठी गीतोंसे ताल औ तलैया रे !
बही पुरवैया रे !

आमका टिकोरा देख मन ललचाय रे,
गाँवकी किशोरी छीन 'पारकर' पराय रे
कविता अधूरी, सूनी दिलकी मँड़ैया रे !
बही पुरवैया रे !

बैलोंकी घण्टी झुनके, ठुनके बछरुआ रे
रातके पहरुआ गीत लिखते कहरुआ रे
कौन सुने भैया तेरे कवित औ सवैया रे !
बही पुरवैया रे !

खुरपी, कुदाल, हँसिया यही मेरे साथी रे
लेखनी हथोड़ा, भरी भावोंकी भाथी रे
मार्क्स और लेनिन—राम-लखन दूनों भैया रे !
बही पुरवैया रे !

छन्दोंके बंद टूटे, कहीं ऊँच-खाल रे
कच्ची सड़कपर भैंसागाड़ीकी चाल रे
ग्रामगीत लिखते भैया, मालिक गुसैयां रे !
बही पुरवैया रे !



टेर रही पिया तुम कहाँ ?

(पैरोडी)

खिड़कीके पास झुकी इमलीकी डार रे।
डारविनके पोतोंका उसपर अधिकार रे।
बाथ रूमसे रही मैं कबसे पुकार रे।
बन्दर ले गया मुआ मेरी सलवार रे।
इमलीके चियाँ तुम कहाँ?
टेर रही मियाँ तुम कहाँ?

साजिदे कविताके जुटा रहे साज रे।
जोड़ रहे तुक जैसे काबुलीका ब्याज रे।
मरनेपर तेरे ओ मेरी मुमताज रे।
बनवाऊँ काशीमें एक नया ताज रे।
कहके गये मियाँ तुम कहाँ?
टेर रही मियाँ तुम कहाँ?

'एरियल'के खम्भेपर कौएकी पाँत रे!
काँव-काँव नहीं, गीतकी है बरसात रे!
रेडियो कवि-सम्मेलन कविकी जमात रे!
प्रेमसे खिलाओ भैया इन्हें दूध-भात रे!
सुनो 'कियाँ कियाँ' तुम कहाँ?
टेर रही मियाँ तुम कहाँ?

चायकी तो प्याली है—हींगकी बघार रे!
लोकगीत, शोकगीत, फिल्मकी डकार रे!
उमड़ चले गीत, टूटी तुककी पतवार रे!
डूब गयी कागजकी कविता मझधार रे!
लेते झपकियाँ तुम कहाँ?
टेर रही मियाँ तुम कहाँ?



एक प्रयोगवादी कविकी आत्मकथा

वेस्ट पेपर बास्केट हूँ।

धोबी दर्जीके बिलोंने रूप है मेरा सँवारा,
फिल्म, नावेल, होटलोंने ज्ञान है मेरा उभारा,
डिगरियोंका कैस्केट हूँ।
वेस्ट पेपर बास्केट हूँ।

पढ़ते-पढ़ते हो गया रोमांस, शादी, छोड़ काशी।
पड़ा हूँ बेकार बनकर 'फादर-इन-ला'—गृह-प्रवासी
अजी मैं 'ला-ग्रेजुएट' हूँ।
वेस्ट पेपर बास्केट हूँ।

श्रीमतीको साथ ले साहित्यमें मैं घुस गया हूँ,
श्रीमतीके प्रेमके ही गीत मैं लिखने लगा हूँ,
श्रीमतीका पैम्फलेट हूँ।
वेस्ट पेपर बास्केट हूँ।

लोग पत्नीको बुलाते, साथ मैं भी पहुँच जाता,
श्रीमती अध्यक्ष बनतीं मैं नयी कविता सुनाता,
काव्यका मैं आमलेट हूँ।
वेस्ट पेपर बास्केट हूँ।

काव्य, नाटक, गल्प, नावेल इधर जब लिखने लगा था—
एक सहृदय समालोचक श्रीमतीको ले भगा था,
आजकल भैया 'टुलेट' हूँ।
वेस्ट पेपर बास्केट हूँ।



नयी कविता (२)

निशा-छोरके स्वप्न-सेजसे उठकर निंदिया भागी,
प्रात तारिका हँस दी, उन्मन मन हो उठा विरागी।
    नभके नयन कोरमें कज्जल मेघ-खंड सोया था,
    फटे दूध-सा हृदय, लिये कवि फूट-फूट रोया था।
क्वारी धरती ओढ़ चाँदनी चादर इतराती थी,
आवारा-सी हवा फिल्मके गीत गुनगुनाती थी।
    अनदेखे बागोंमें फूली थी यौवनकी वेला,
    अनायास ही पहुँच गया पागल कवि वहाँ अकेला।
अनब्याही आँखोंने देखा—ठग-सी रही जवानी,
चिर-परिचितसे लगे अपरिचित, अनचीन्ही पहचानी।
    बढ़ी बात आँखोंके ऊपर, चढ़ा प्रेमपर पानी,
    धड़कन बढ़ी, घटी दूरी बन गया संकुचित दानी।
डोरोंका विस्तार किया, कुछ कोरोंको फैलाया,
नयन-जालमें फँसकर नभका पंछी भूपर आया।
    अनदेखी आँखें भी कहती थीं अनकही कथाएँ,
    लिपट रही थी स्वप्न-शून्यमें कविकी आकुल बाहें।
प्रगतिशील था प्रेम बीचमें लगा स्वप्नको झटका,
हृदय हिनहिना उठा—गया जैसे फाँसीपर लटका।
    असफल हुआ, प्रयोगवादकी कविता रही अधूरी,
    नयी प्रेयसीके मिलनेपर इसे करूँगा पूरी।
आसमानका हृदय चीर नीड़ाकुल उल्लू रोया,
नयी नमूनेकी कविता लिखकर भैयाजी सोया।

कवि बदलो !

युग बदला, तुम बदल न पाये,
अरे खड़े हो क्या मुँह बाये ?
बन्द घड़ी है चाभी देकर
तुम युगको बदलो !
कवि बदलो !

आगे बढ़ता चला जमाना,
तुम चुगते सपनोंका दाना,
नये गीत लिखकर गाओ,
गा सबसे गले मिलो !
कवि बदलो !

यह सफेद पोशाक तुम्हारी,
बनी प्रगतिमें बाधा भारी,
नाबदानके गीत लिखो
कीचड़में सन उछलो !
कवि बदलो !

भूनो दिलको बने कलेजी,
नया प्रयोगवाद अंग्रेजी,
सुरासिक्त कविता ले भैया
'माइक'पर मचलो!
कवि बदलो!

भैयाजी पड़ गये पुराने,
कविता लिखना वह क्या जाने?
टाँग तोड़ कविताका तुम
सरके बल दौड़ चलो!
कवि बदलो!



तुलसी-जयन्ती

सुनो तुलसीदास,
कल आयी तुम्हारी याद ।
बैठा रेस्तराँमें
कर रहा बकवास ।
घुल रहे थे
चायमें
साहित्यके सब वाद ।
रुकी चरचा,
एक परचा
हाथमें दे
तुरत बोले—
मौसमी साहित्य संगमके
विधाता—
'आज तुलसी जयन्ती है ।
आपको चलना पड़ेगा
और तुलसीदासपर
दो शब्द—कुछ
कहना पड़ेगा ।
कौन तुलसीदास ?
नेता या मिनिस्टर,
दूत या शिक्षासचिव,
या डाक्टर साहित्यका,
या टेक्स्टबुकका नया मेम्बर ?
याद आया
अरे तुलसी—
वही तुलसीदास—
जिसने रामका किस्सा लिखा है,
दोहे और चौपाइयोंमें
एक रामायण रची है
हो रहा अनुवाद
जिसका मास्कोमें ।
तब इसे पढ़ना

पड़ेगा।
पापुलर कवि
एक पैसा बिना रायल्टी
लिये ही,
पेंशन-उपहार कुछ
सरकारसे पाये बिना ही
मर गया।
दीन गोसाईं बेचारा!
भाग्यशाली था—
जयन्ती जो मनायी जा रही है
आज घर-घरमें।
एक मैं हूँ—
गीत लिखता
चाय औ' सिगरेटके उड़ते धुँएपर,
रूप-शैंपेनके नशेपर,
गीत ढोलक-खजड़ियोंके
पसलियोंके, अँतड़ियोंके।
मैं प्रगतिवादी महाकवि
और तुलसीदास
प्रतिद्वन्द्वी हमारा।
मैं नहीं जाता,
जयन्ती मैं मनाता
स्वयं अपनी।
चल दिये आचार्य
लटकाये हुए मुख—
और मैं था,
चायका कप,
चुस्कियोंमें गुनगुनाता
गीत नागिनके।



नया नमूना

जी में आया कर डालूँ मैं भी कुछ,
कविता के प्रयोग !
इसीलिए मैं आज ले रहा अक्षत-
योनि पार्कर, कर में ।
किंतु लिखूँ क्या ?
दृष्टि नयी, पर सृष्टि पुरानी
विषय पुराने, वस्तु पुरानी,
शब्द पुराने, छन्द पुराने !
कविता—लेकिन नयी चाहिए ।
एक सामने गाय खड़ी है,
और पड़ा खंचिया भर गोबर ।
ग्वालिन उसे बटोर रही है ।
गोबर सत्य और शिव सुन्दर ।
धरती का यह लेप मनोहर ।
गोमाता की देन,
अन्न का पोषणकर्त्ता—
खाद-रूप-धर ।
किन्तु, प्रतीक पुराना है,
गोबर गनेश का ।
हमको नये प्रतीक चाहिए ।
नहीं चाहिए
गनन देवता, जनन देवता,
लगंन देवता, गगन देवता ।
एक हमारा है जन देवता—
नया देवता ।
नये पिता को—इष्ट देव को
प्रथम याद कर, निकला
देने नया नमूना
नव प्रयोगवादी कविता का ।
पर प्रयोग आसान नहीं है
काव्य-प्रसव की कठिनाई को
बस कोई नारी से पूछे ।
खीझ उठी तो—झुँझला करके
दे मारा हमने
दिमाग दीवारों पर
लेखनी-हथौड़ा ।

सिनेमा की तसवीरों सी
बस लगे सूझने
नये विषय तब—
धुआंकश–मिल की चिमनी पर,
धरतीकश–किसान बाला पर,
मेहनत-कश मजूर-बाला पर,
जोबनकस–ब्रेसियर चोलिका
नये अछूते विषय सभी थे।
दिल-दिमाग के नये खोल पर
कामरेड के बटन-होल पर
झटके हुए, मित्र के घर से
गबर्डीन के नये कोट पर
लाल लटकती नेकटाई पर,
और दिमागों की काई पर,
बट-कोटर जैसे चेहरे पर,
नये घोंसलेसे बालों पर,
बटन मुक्त पतलून शर्ट पर,
नये चिरैयाटांग आर्ट पर,
चनाजोर वाली बानी पर,
वाल्गा के निर्मल पानी पर,
चीनी मिट्टी के प्यालों पर,
मास्को के नहरों-नालों पर,
खुरपा औ कुदाल-हँसिया पर,
मुष्टि-हथौड़े की मुठिया पर
घूँसा-मुक्का, हाथ-टाँग पर,
लाल मुर्ग के प्रथम बाँग पर,
लाल फरहरा, लाल रङ्ग पर,
लाल खून पर, लाल जङ्ग पर,
एटम, पनडुब्बी जहाज पर
बम के फटने की आवाज पर,
माओ, स्टालिन महान पर,
रूस, चीन, चींपों तान पर,
(और जवाहरलाल! क्या कहा?
तुम निकले गद्दार बस महा।)
मुर्ग-मुसल्लम, आमलेट पर,
दिल-दिमाग पर नहीं, पेट पर,
भिखमंगिन यौवन-उभार पर,
पत्नी के संग बलात्कार पर,
समतावादी आलिङ्गन पर,
फ्रीलव, जनवादी चुम्बन पर,
नयी प्रेमिका, नये प्यार पर
नूतन साथी, नयी कार पर
नया सोमरस–वोदका पीकर
बने महाकवि मुरदे जीकर

बेसिर पैर-टाँग की कविता
बिना शराब-भांग की कविता।
बस बस, नहीं अभाव
विषय का,
कविता के नूतन प्रयोग
के लिए शीर्षक—
एक सौ एक सुरक्षित ही हैं।
चलूँ एक कप चाय मंगाऊँ।
फूटी कौड़ी पास नहीं
पर रेस्ट्रां का मालिक
उदार है।
कभी कभी वह
दे देता मुझको उधार है।

चाय एक कप, जिसको पीकर
आज करूँगा कविता के नूतन
प्रयोग मैं।
रेस्ट्रां वाले
तुम भी कितने प्रगतिशील हो।
भैयाजी लो पियो चाय
औ नयी प्रगति की
कविता के प्रयोग
करके मर जाओ।
नहीं तुम्हारे पोते
जीते जी तुमको
बोरजुआ कहेंगे।



धार्मिक

बाबा विश्वनाथके दरबारमें एक हरिजनकी अर्जी

विश्वनाथ, दुनियाके मालिक तेरा यह दरबार
दर्शनको है खड़ा तरसता कबसे एक चमार।

दरवाजेपर सींग दिखाते नन्दीके अवतार
बाँट रहे सिनेमाघर जैसा दर्शनका अधिकार।

तुम हो भंग-समाधि लगाये कबसे भोलेनाथ
पटक रहा हूँ ड्योढ़ीपर मैं कबसे अपना माथ।

महादेव मानवके बंदी, रक्षक प्रहरी कौन
यह कैसा अन्याय देव! तुम अरे अभीतक मौन!

बिना कहे करते-फिरते हो तुम जगका कल्याण
किन्तु द्वारपर इस भिक्षुकको माँगे मिला न दान।

होता है त्रिशूलका अब हरिजनके लिए प्रयोग
और उधर आँखें मूँदे तुम साध रहे हो योग।

सब पापोंके जनक कामको किया तुरत ही क्षार
सबसे पापी जीव सृष्टिमें केवल एक चमार?

जटा-जूटमें गंगाकी बहती है निर्मल धार
फिर भी महादेव डरते—छू देगा एक चमार!

विषधरकी माला लपटाये, बना गले का हार
चरणोंका स्पर्श नहीं पा सकता एक चमार।

घोट गये विष-कलश खेलती रही अधर मुस्कान।
बतलाओ हे नीलकंठ ! क्यों हरिजनका अवमान।

कैसे शिव, कैसी गंगा और कैसा हिम-कैलास
आ सकता है नहीं भक्त हरिजन चरणोंके पास।

एक क्षुद्रकी छाया पड़ते ही हे महा-महान
मुझ जैसे ही हो जाओगे—यह आश्चर्य महान।

तुम शिवसे यदि अशिव हो गये तो मुझको धिक्कार
नहीं चाहिये महादेव अब दर्शनका अधिकार।

बाट जोहता हूँ प्रलयंकर, बढ़े पापका भार
जटा-जूटसे गंगा उमड़े हो निर्मल संसार।



शिवकी गुहार

द्वारपर हरिजन खड़ा कर रहा हर-हर बम।
बन्द जंगलेमें इधर हम कर रहे हैं गम।
सुना नन्दी! हरिजनोंके पास है अणु बम।
अब बनाने जा रहे हैं हाइड्रोजन बम।
बने बन्दी, हो गये कमजोर इतने हम।
प्रलयका नुसखा छिना, अपमान यह क्या कम?
जँगलेके अन्दर हमारा घुट रहा है दम,
लगा करफ्यू, नजरबन्दी, टूटता संयम।
भंगका कोटा घटा, तन क्षीण निकला दम।
क्या बदल ही गया बिलकुल देशका मौसम?
घूमते एम. पी. मिनिस्टर स्वच्छ बन चमचम।
दावतोंमें खूब पीते वोदका औ रम।
फूट पड़ते भंगपर आपत्तियोंके बम।
हो गया जीना कठिन औ छानना भी कम।
तेनसिंहने शिखरपर चढ़ किया हर-हर बम
छोड़ काशी कहाँ जायें बोल नन्दी हम?
'हरे शिव-शिव, गंग हर-हर', 'बोल हर-हर बम'
नाश है—नजदीक नन्दी मनाता मातम।

कुंभ-यात्रा

कुंभ नहाने गये थे भैया सहित हुलास।
टिकट स्वर्गका न मिला, लौटे बहुत उदास।
सुना स्वर्गका खुल गया संगममें था द्वार,
नर-नारी दौड़े सभी उमड़ा पारावार।

खुल गया स्वर्गका महाद्वार, लग गयी कतारोंपर कतार।
बूढ़े, जवान, स्त्री, बच्चे, आस्तिक, नास्तिक, गुण्डे, लुच्चे।
सूनी सड़कोंकी गोद भरी, निर्जनमें सरिता दौड़ पड़ी।
चल पड़ी कार, बग्घी टमटम, उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम।
था चार दिशाओंका संगम, गूँजा स्वर एक—'चलो संगम'।
नरमुण्डोंका अद्भुत संगम, नरझुण्डोंका अद्भुत संगम।
साधू-संन्यासी, वैरागी, कुछ उदासीन कुछ थे रागी।
प्रति पगपर साइनबोर्ड नया, था बरस रहा इनपर रुपया।
लाउडस्पीकरकी बहार, हाथी-घोड़ोंकी थी कतार।
काले हाथी, सफेद हाथी, मंत्री-महन्त दोनों साथी।
संगमपर लाखों थे झण्डे, इनके नीचे बैठे पण्डे।
अपनी-अपनी खोले दुकान, कर रहे बिचारे अमृतदान।
यह महाकुंभका अमृत-घट, पर आज अचानक गया उलट।
सब बाँध तोड़कर दौड़ पड़े, भैयाजी केवल रहे खड़े।
खुल गया स्वर्गका महाद्वार, क्षणमें वैतरणी किया पार।
आया संगमपर महायान, कुछ गये—बड़े थे भाग्यवान।

कुछ अस्पतालमें गये छले, जो गये—भाग्यके रहे भले।
भक्तोंके पैरों गये दले, कहता है कौन गये कुचले?
ये मुक्त हो गये, हुए अमर, यह महाकुँभका महासमर!
कुछ रोनेवाले रोते हैं, वे नाहक आँखें खोते हैं।
यह महाकुँभकी है माया, आखिर तो क्षणभंगुर काया।
भैया यह भेद बताते हैं, जय महाकुम्भकी गाते हैं।
जय मंत्रीकी, जय नागों की, जय मुंशीके बुलडागोंकी,
जय मृतकोंकी उन आंतोंकी, जय नागोंकी बारातोंकी
जय-जय मन्त्रीकी कारोंकी, घायलकी चीख-पुकारोंकी
जय नाहक मरनेवालोंकी, जय दावत के कप-प्यालोंकी।
हाथीपर चढ़े महन्त चले, मोटरपर मंत्री चढ़े चले।
नागा महंत लगते जैसे, यमराज और उनके भैंसे।
सब बांध ले गये भिखमंगे, हरहर गंगे, हरहर गंगे!
टिकट स्वर्गका बंट गया, बंद हो गया द्वार।
कैसे जायें बेटिकट भैया करें विचार।



वी० आई० पी० धन्य धन्य है !

महाकुम्भके अमृतघट से महाप्रभू तुम हँसते निकले,
तुम्हें देखने आये कितने राजा, अफसर, साधू-कंगले।
उमड़ पड़े जन कोटि-कोटि दर्शनको भैयाजी भी मचले,
दर्शनका अमृत पीनेको गये हजारों पगतल कुचले।

नरमुंडोंको कुचल-कुचलकर ही नेता आगे बढ़ता है,
चीख-पुकारों, नारोंमें ही महामंचपर वह चढ़ता है।
नरमुंडोंकी माला पहने वह तो नया विश्व गढ़ता है,
महादेवकी निंदा करना भैयाजी सचमुच जड़ता है।

वह महन्त है, महासन्त है, महासाधु है, जनका नेता,
कोटि-कोटि भेड़ोंका नायक, सूत्रधार है और परेता।
यह भेड़ियाधसान कुम्भका वह जननौका बाहर खेता,
नहीं स्वर्गका टिकट कहीं कुछ, वह सबको प्रवेश है देता।

महाकुम्भमें श्वेत हाथियोंका भैयाजी अद्भुत संगम,
वी० आई० पी०, नागा, साधू, मन्त्री-संत-महंत समागम।
अमृत वितरक और स्वर्गके पथनिर्देशक पुरुष महत्तम,
नरबलि देकर भोग लगाते करमें प्याला मुखमें चमचम।

करो कीर्तन !

भूख लगे जब अँतड़ी रोये, राम-रोमसे टपके पीरा,
रोटीका मत राग सुनाओ, लेकर बैठो झाँझ-मजीरा।

भैयाजी बेकार अगर हो, तब तो है फुरसत ही फुरसत,
कन्धेसे लटका लो ढोलक करो चार सन्तोंकी संगत।

गला फाड़ चिल्लाते थे कवि अबतक करके कवि-सम्मेलन,
कानोंके परदे फट जायें भैया ऐसा करो कीर्तन !

मंगनी या उधार ले लो कोई तगड़ा लाउडस्पीकर,
ढोलक, झाँझ, मजीरा, कंकण-किंकिणि-नूपुरका मिश्रित स्वर।

अर्धनिशा, लाउडस्पीकर, राम नामके गोले दागो,
चले धमाचौकड़ी अखण्डित सुनो मुहल्लेवालो जागो।

शोर मचाओ ऐसा जिससे सोये बच्चे उठें दनादन,
चुप होकर बैठें शृगाल भी भैया ऐसा करो कीर्तन !

अरे नास्तिकोंके कानोंमें घोलो तरल कीर्तन-पारा,
कहीं परीक्षार्थी रटते हों बोलो राम-नामका नारा।

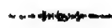
राम नामके दो अक्षरमें पूर्ण ज्ञान, सम्पूर्ण पढ़ाई,
अरे मूर्ख हो, व्यर्थ रटाई कर तुमने जिंदगी गंवाई।

व्यर्थ पढ़ाई, व्यर्थ किताबें, व्यर्थ तुम्हारा नैश-जागरण,
छोड़ परीक्षा, नूतन दीक्षा लो भैया संग करो कीर्तन !

भारत यह दो खण्ड हो गया पर हम करते रहे कीर्तन,
टुकड़े-टुकड़ेको मुहताज मगर हम रटते रहे रामधुन।

भूख-प्यास चिथड़ेको तुरन्त भुला दे भैया अजब नशा है,
चिरजीवी हो अरे गरीबी मेरे मन तो राम बसा है।

हे भारतके भाग्य-विधाता राम तुम्हारा हैं अभिनन्दन,
मेरा भी खयाल रखना भैयाजी है कर रहा कीर्तन !



देखो तुम्हरी काशी !

हत्या और आत्महत्यामें जहाँ न कोई अन्तर,
बड़े-बड़े अजगर शिकारकर हो जाते छूमन्तर,
लाश आत्महत्या करती हो सुनकर आवे हाँसी।
भैया देखी तुम्हरी काशी।
चारों ओर बरसते घन काशीमें कहीं न पानी,
पूछा तो बोला घन आंसू बरसायें या पानी,
भूतोंकी नगरीमें यह लाशोंकी जेबतलाशी।
भैया देखी तुम्हरी काशी।
लोग अंगौछा पहने घूमे, नहीं चाहिये धोती,
पान चबाकर ही रहते, दुनिया राशनको रोती,
फिकर नहीं खाने-कपड़ेकी, विजया चहिये खासी।
भैया देखी तुम्हरी काशी।
गली-गली फिरते जनसेवक नयी दूकान लगाये,
साइनबोर्ड किसी संस्थाका गर्दनसे लटकाये,
बनकर मठाधीश बैठे, चन्दा चरणोंकी दासी।
भैया देखी तुम्हरी काशी।
बनें स्वयं-सेवक नेताजी तोंद बढ़ चली भारी,
अपनी ही जय बोल स्वयं अपनी आरती उतारी,
नेता बने मालपूआ औ जनता खदुआबासी।
भैया देखी तुम्हरी काशी।
भैयाजी सीधे-सादे कुछ लोग तने बैठे हैं,
खरी-खरी बातोंसे भी कुछ जले-भुने बैठे हैं,
कहते नेहरूसे 'भैयाजी' को लटका दो फांसी।
भैया देखी तुम्हरी काशी।

काशी

एक ओर बहती हैं गङ्गा,
एक ओर फिरते हैं नङ्गा।
एक ओर जपते हैं माला,
एक ओर बहता पानाला।
एक ओर साहित्यिक पण्डे,
रंग-बिरंगे लटके झण्डे।
होटलमें बिस्कुट और अण्डे,
गीत बेचते गण्डे-गण्डे।
साहित्यिक पण्डोंकी काशी,
मुच्छन-मुछमुण्डोंकी काशी।
नेताओं-गुण्डोंकी काशी।
सण्डों-मुस्टण्डोंकी काशी।
धोती औ कुरते की काशी,
बैगनके भुरतेकी काशी।
प्रदर्शनी, मेलोंकी काशी,
गुरुओंकी, चेलोंकी काशी।
यहाँ पानका मान अधिक है,
पानोंकी दूकान अधिक है।
दूकानोंपर ज्ञान अधिक है,
और ज्ञानका दान अधिक है।
भांग यहां राष्ट्रीय पेय है,
संजीवन बूटी अजेय है।

काव्य-स्रोत, संगीत गेय है,
यही प्रेय है, यही श्रेय है।
पीक पानकी है पिचकारी,
जब जीमें आया दे मारी।
सिल्क, सूट चाहे हो सारी,
यह काशीकी 'चित्तरकारी'।
सड़क-सड़कपर भाँड़ मिलेंगे,
गली-गलीमें साँड़ मिलेंगे।
चोर, गिरहकट और चाइयां,
सभी एकसे एक काइयां।
ये काशीके कलाकार हैं,
भैया ये कितने उदार हैं।
हरते सबका जेब भार हैं,
साम्यवाद करते प्रचार हैं।
चौराहेपर सांड़ लड़ाते,
चौराहेपर आंख लड़ाते।
चौराहेपर गप्प लड़ाते,
चौराहेपर ही जम जाते।
काम नहीं अवकाश बहुत है,
दर्शनपर विश्वास बहुत है।
भोजन, भङ्ग मौजका जीवन,
भैया यह बनारसी दर्शन।



जाड़ा-गरमी-बरसात

विरह-गीत

गरमी आयी, पिया न आये, निकले बड़े छली
कबसे सूना पंथ निहारूँ, सूनी सड़क गली।
भरी जेठकी दुपहरिया-सी तपती हुई जवानी
विरह सूर्यने प्रेमपरीक्षा लेनेकी है ठानी।
सूखे अश्रु, पसीनेकी सरिताएं बह निकलीं।
गरमी आयी, पिया न आये!

तरल अनल लूकी लपेटमें लिपटी हवा चली
आह भरी, तो हरी-भरी बगिया भी झुलस जली।
गरमी नहीं, उपेक्षित कोई मानिनि है मचली।
गरमी आयी, पिया न आये!

सुनती हूँ पहचानी पगध्वनि कबसे कान लगाये
पत्ता खड़का, बछरू ठनका, करे कहीं वह आये।
पोस्टमैन भी गया, प्यारकी पाती नहीं मिली।
गरमी आयी, पिया न आये!

प्राणपखेरू उड़नेको आकुल बैठा मुंह-बाये,
आते-आते कहीं राहमें बैठ पेड़के साये,
तुम प्रयोगवादी कविता या लिखते हो कजली।
गरमी आयी, पिया न आये!

एक दिलजलेने गर्मीमें नया रेस्टरां खोला
मुफ्त पिलाता सबको लस्सी, शर्बत कोकाकोला।
गरमी अरे प्यारकी गरमी लगती बड़ी भली।
गरमी आयी, पिया न आये!

भैया आओ चलें मसूरी !

धूप - वधूने घूंघट खोला
पिघला सूरज माखन गोला
धरती तवा बनी, हम रोटी
जैसे सिके, पसीना छोला
चोला पस्त, हवा है मस्ती
जीना है केवल मजबूरी।
भैया आओ चलें मसूरी।

भैया सूरज जमींदार है
तपनेका एकाधिकार है।
या कोई है पुलिस दरोगा,
किरणोंका लाठी प्रहार है।
गरमी भर सूरज राजा है
आओ हम सब करें हजूरी।
भैया आओ चलें मसूरी।

भैया सूरज बना 'मिनिस्टर
आसमानपर है दिमाग-सर,
गगन - मार्गसे करता दौरा
धरतीकी परवाह क्या फिकर।
'राजा और प्रजामें इतना
सदा रहेगा अन्तर दूरी।
भैया आओ चलें मसूरी।

रह-रह बहने लगा पसीना
कठिन हो गया अब तो जीना।
चलकर स्विटजरलैण्ड बितायें
गरमीका यह कठिन महीना।
प्रथम सर्गमें ऊब गये क्या
अभी विरहकी कथा अधूरी।
भैया आओ चलें मसूरी।

जला-जलाकर अपनी काया
गरमीमें हमने क्या पाया?
केवल लंगड़ा आम के लिए
नाहक इतना हमें जलाया।
'भैयाजी' काशीमें बैठे
झख मारो, मैं चली मसूरी।



मानसूनके प्रति

प्रथम दिवससे ही असाढ़के बैठे हम कर रहे प्रतीक्षा,
उधर अरब सागरमें शायद तुम ले रहे अमेरिकी दीक्षा।

पाकिस्तान पहुँचकर जलधर जी भरकर डालर बरसाओ,
प्यासे हम भी तड़प रहे हैं थोड़ा-सा पानी दे जाओ।

गोआ डामनकी काली बस्तीको जीवनदान कर रहे,
ढाका और कराचीके ऊपर नूतन अभियान कर रहे।

घन-घमण्डमें गरज रहे हो, गरज-गरज आकाश भर रहे,
आसमानके ऊपर शायद अणु बमका अभ्यास कर रहे।

बाइबिल, हाइड्रोजन बम लेकर गली-गलीमें बैण्ड बजाओ,
धरतीके कोने-कोनेमें अपनी धर्मध्वजा फहराओ।

चुन-चुन देव पिलाओ अमृत लेकर तानपुरा तुम गाओ,
भारतके भूखोंसे कह दो—'जाओ कम्युनिस्ट बन जाओ।'

आसमानसे उतरो भूपर हे गर्वीले जलधर दानी,
हलका-सा आघात लगेगा हो जाओगे पानी-पानी।



बादल !

नील कमल-सी छायी बदली
कोयल बैठ गा रही कजली,
नभमें गरबा नृत्य हर गली।

आसमानकी झील बढ़ चली,
बुरका पलटन कहीं चढ़ चली,
बांध तोड़कर नदी कढ़ चली।

यह कोई सैलाब आ रहा,
या चिमनीका धुआं छा रहा,
तानसेन मल्हार गा रहा।

झूम रही नभ परी हिंडोला,
फूटा है अणु बमका गोला,
अथवा है पञ्जाबी छोला।

नहीं श्यामघन, कामिनि कुंतल,
फैल गया आँखोंका काजल,
उलट गयी स्याहीकी बोतल।

कोई केश तैल विज्ञापन,
नीग्रो सुन्दरि खोले आनन,
कथाकलीका होता नर्त्तन।

इन्द्रराज यूं जोड़ रहे घन,
करके शिलाजीतका सेवन
'सीटो', 'नाटो'का आयोजन।

गर्दभ गुरु गम्भीर नाद है,
यह पाकिस्तानी जिहाद है,
अथवा पति-पत्नी विवाद है।

नभमें कोई कवि सम्मेलन,
मेघराजके घर है मूड़न !
कविगण गिरा रहे हैं जूठन,

यह काली बनारसी साड़ी,
औ दे रहा जुलाहा माड़ी,
या झरियाकी कोयला गाड़ी।

सचिवालय फाइल-प्रसार है,
मिनिस्टरोंकी नयी कार है,
नेहरूका दौरा-प्रचार है !

अमरीकी डालर वितान है,
या पाकिस्तानी विमान है,
अथवा जापानी कतान है।

पितरोंने सन्देश है भेजा,
चला जुलाहा लेकर रेजा,
भून रही प्रेमिका कलेजा।

कालेज 'लव' अभियान चल रहा
शायरका आशियां जल रहा,
हीरोका है हृदय गल रहा

शायद कागोंकी बरात है,
पितृपक्षकी यह जमात है,
कोयलकी सोहागरात है।

'माओ'का अभियान चल रहा,
किंग कांग जलपान चल रहा,
पाक-हिंद जलदान चल रहा।

विनोबाजी भूदान कर रहे,
जे० पी जीवनदान कर रहे,
कृपलानी श्रमदान कर रहे।

कालोंकी हो रही चढ़ाई,
है मलानकी शामत आयी,
नभमें हुए इकट्ठे नाई।

कांग्रेसका उदय पाप है,
आसमानका रुष्ट बाप है,
करपात्रीका यज्ञ-जाप है।

उभय हुआ कविताका नवयुग,
कामरेड ले निकले जनयुग,
अथवा शुरू हो गया कलियुग!

लगते आसमानपर बादर,
जैसे लटके हों चमगादर,
एम० पी०के संग बन्धु-बिरादर।

उपमाओंकी ढेर लगा दी,
जैसे हो कविताकी गादी,
अथवा हो गदहेकी लादी!

काले-काले बादल ऐसे,
जैसे यमराजाके भैंसे,
लगते बिलकुल मन्त्री जैसे।

उनइ आये बदरा !

सिनेमा था जाना मुसीबत खड़ी थी,
इधर लग गयी जो यह वर्षा झड़ी थी,
औ चेहरेपर दो चार बूँद आ पड़ी थी।
बहै लागे अंसुआ, बहे लागे कजरा !
उनइ आये बदरा !

चली बहके चेहरेसे रंगीन नाली,
यह पाउडर सफेदी, यह काजलकी काली,
चली इनमें घुलमिलके लिपस्टिककी लाली।
कि इंदर का जैसे तिरंगा है फहरा !
उनइ आये बदरा !

फिसलती सड़क, ऊंची एड़ीको पाले,
बरसते हुए कौन मूसल संभाले ?
अरे उड़ गयी उनकी छतरी हवा ले।
उड़ै लागे घघरा, उड़ै लागे अंचरा !
उनइ आये बदरा !

मजा टायलेटका हुआ किरकिरा है,
यह बरसातमें क्या न जाने धरा है,
जो तारीफ करता अजी सिरफिरा है।
बहे लागे कूड़ा, बहै लागे कचरा!
उनइ आये बदरा!

कि बरखामें मनहूसियतका है पहरा,
यह बदरा बनाता, निकम्मा औ बहरा,
जो साड़ी भी पहनो तो बनती फरहरा,
चढ़ै लागे अदरा, उड़ै लागे चदरा!
उनइ आये बदरा!

शुरू कवि-विरहिनोंका रोना औ गाना,
शुरू मेढकोंका है फिल्मी तराना,
शुरू श्रीमतीका घरेलू फसाना,
भरे लागे गगरा, ढुलै लागे बदरा!
उनइ आये बदरा!



बादलका स्वागत

बादल राजा आओ, आओ,
आसमानमें बैण्ड बजाओ।
चाहे मेघ-मलार सुनाओ,
कोई फिल्मी तर्ज सुनाओ।

किधर चले लेकर दल-बादल,
भूरे काले, श्यामल-श्यामल।
कामिनिके कुंतलसे काले
या हब्शी अफ्रीकावाले।

आसमानमें दौड़ हो रही
जैसे कि घुड़दौड़ हो रही।
या संसदकी 'सिटिंग' चल रही
सिनेमाकी शूटिंग चल रही।

धरतीकी आरत पुकारपर
दौड़ पड़े नभसे दहाड़कर।
नेता जैसा धवल रूप धर
बरस रहे हो गरज-गरजकर।

घनका यह कैसा प्रसार है
भारतका योजना-भार है।
अमेरिकी डालर उधार है
अथवा यह रूसी प्रचार है।

विरहिन लगी बहाने अँसुआ
कामरेड ले निकले हँसुआ।
तुम्हें देख भैयाजी भकुआ
जमा रहे कविताका अँखुआ।

बाढ़

सुना है टौंस, सरयू गोमतीमें बाढ़ आयी है,
खबर उनको सुनाते हैं तो गोया मूँग दलते हैं।
अजी हर सालका किस्सा है, यह सालाना जलसा है,
नहीं यह बाढ़का दौरा सदारत आके करते हैं।
कहाँसे आ गया भैयाजी इतना बाढ़का पानी,
चुनावोंमें गरजते जो वही आकर बरसते हैं।
लिये छप्पर और छानी हम बहे जाते हैं संगमको,
उधर नेताजी पत्रोंके लिए वक्तव्य लिखते हैं।
जरूरत बाँधकी क्या—देखकर नाले मचलते हैं,
ये शायद टूटनेके ही लिए कुछ बाँध बँधते हैं,
यह टूटा बाँध, पुल टूटा, समूचा नगर पानीमें,
अजी ये झूठे किस्सोंसे सभी अखबार भरते हैं।
है दरिया तो बढ़ेगी ही, है बारिश बाढ़ आयेगी,
ये नाले बेअसर हैं भैयाजी अब हम तो चलते हैं।
अजी यह बाढ़का पानी, बढ़ा है, उतर जायेगा,
बैठकर भैया तबतक पेड़पर ही भजन करते हैं।



जाड़ा आया

सिहर उठा अफ़गान हिमानी स्नो से सुन्दरियों का आनन
बन्द हुआ अब बाथ रूम में तानसेन का गायन-नर्तन
गंगाजल के दर्शन से ही रोमांचित हो उठता है तन
सिल्क-साड़ियों औ सूटों में काँप-काँप उठती है काया
जाड़ा आया !

सूट-शेरवानी में देखो निकल पड़े होस्टल के राजे
कोमलांगियों के तन पर भी रंग-बिरंगे कोट बिराजे
शाम हुई तो बन्द होगये होस्टल के खिड़की-दरवाज़े
घुसे घोंसलों में उलूक औ' सड़कों पर सूनापन छाया
जाड़ा आया !

अब न मिलेगी किसी सुन्दरी के घर आइस-क्रीम की दावत ।
आइसक्रीम बन गया पानी शेविंग भी हो गयी मुसीबत
भैय्या जी लो डाल पेप्स की टिकिया चुभलाने की आदत
बालाओं ने ऊन बॉल से अपने मन को है बहलाया
जाड़ा आया !

अब न सुनहरी संध्या होगी अब न प्यार की होंगी रातें
अब न रात की वाकिंग होगी अब न प्यार की होंगी बातें
नाइट शो, चाँदनी रात की बोटिंग, गीतों की बरसातें
भैया जी के मन के आँगन में कुहरे का बादल छाया
जाड़ा आया !

शाम हुई, बदली हो आयी, हवा चली तो काँप उठा तन
खून जम गया, हड्डी काँपी, बन्द होगयी दिल की धड़कन
सम्पादक जी लेकर छापो तुम भी 'लिपटन' का विज्ञापन
भैय्या के काले कंबल में जाड़े का बुखार घुस आया
जाड़ा आया !

छात्र-परीक्षा-कनवोकेशन !

कालेजके कोटर खुले...

कालेजके कोटर खुले स्कूलोंके नीड़
होस्टलके दरबे खुले कबूतरोंकी भीड़।

बांग दिया मुरगेने जाग उठा चिड़ियाघर
'गुटुर-गुटुर गों', युनिवरसीटीमें गूँजा स्वर।

शुरू हुआ नव वर्ष, सालका नया सबेरा
लगे लगाने शावक फिर अड्डोंका फेरा।

फेल हुए चलते चोरों-से लुकते-छिपते
लाल-लाल मुँहपर जैसे हों चूना पोते।

बेकारोंका कारबार फिर शुरू हो गया
कालेजमें घुसते ही चेला गुरू हो गया।

सूटों-बुशशर्टोंमें अकड़े चलते ऐसे
फ्री स्टाइलमें लड़ने जाते हों भैंसे।

कालेज-कन्याओंका फिरसे निकला झुरमुट
साड़ी नित नूतन, ब्लाउज नित नये-नये कट।

कालेज हों जैसे स्टुडियो, शृंगारालय
राह-बाटमें देख लीजिए फिल्मी अभिनय।

होटल औ रेस्टरां-घरोंमें हुई सफाई
सिनेमा मालिकने बढ़िया फिल्में मँगवाई।

पुस्तक-विक्रेता गाहकको देख अघाते
गन्दे उपन्यासका पार्सल रोज छुड़ाते।

दर्जीने उधारबाबूका खोला खाता
खोमचेवाला मुफ्त सभीको चाट खिलाता।

बाबूके बलपर कितनोंकी रोजी चलती
और उधारके बल बाबूकी मस्ती चलती।

पढ़ा रहे बबुआको बाबू, घरमें टोटा
पढ़-लिखकर निकले भैयाजी सिक्का खोटा।

भैयाजी भी रहे कभी सबसे बढ़-चढ़कर
बैठ सड़कपर आज जोड़ते साइकिल-पंचर।



एक छात्रकी नोटबुकपर

रेस्ट्रामें कल किसी छात्रकी एक नोट बुक हाथ लग गयी,
लगा उलटने पन्ने, जागी स्मृतियां औ नींद भग गयी।

प्रथम पृष्ठपर सहछात्राओंकी नामावलि और पता था,
कौन कहाँ रहती है इसकी भी खोज-खबर रखता था।

बायरन, शेली, कीट्स 'कोट' थे, 'बिउटी'का वह परम भक्त था,
और पन्तका 'जघनोंके मानिकसर'का सौंदर्य व्यक्त था।

ब्लाउजके गवाक्ष 'कट आउट'से गोरा तन यौवन झांका,
तुरत चरित नायकजीने दिलके पन्ने पर अनुभव टांका।

एक पृष्ठपर कवियों और शायरोंका अद्भुत सम्मिश्रण,
सार शायरी कविताका केवल यौवन-चुम्बन-आलिंगन।

कविताके नूतन प्रयोग थे, बेतुक थे कुछ, कहीं छन्द था,
कक्षाकी अज्ञात यौवनाओंका नखशिख रूप बन्द था।

कालिदासकी मधुर कल्पना, मिर्जा गालिबके टुकड़े थे,
चित्रकलामें भी अभिरुचि थी कटि औ कुचके रूप खड़े थे।

पालिटिक्स थी, फिलासफी थी और साथ ही मार्क्सवाद था,
सोशलिज्म, भूदान, नेहरूवाद—मिला सबका सवाद था।

प्रीतिकालके मधुर गीत थे, रीतिकालके सुघर सवैया,
कहीं 'हाय मधुबाला' का स्वर, कहीं चीख थी 'आह सुरैया'।
एक पृष्ठ 'एनगेजमेंट'का, सुबह-शामका आना-जाना,
मैटिनीका प्रोग्राम कहीं तो, लता तलतका कहीं तराना।
प्रोफेसरकी मूछोंपर, लड़कीकी चोलीपर 'रिमार्क' था,
होटलका हिसाब, रेस्ट्रां बिल, कहीं पानका पीक-मार्क था।
मिला अन्तमें सूक्ति-वाक्य यह उलट चुके जब सारा पन्ना,
'क्या बैठे झख मार रहे हो चलो पार्टनर चूसें गन्ना'।
भैयाजी है व्यर्थ नोटबुक लेखकके मनका विश्लेषण,
सर्वोपरि है, सर्वश्रेष्ठ है कामशास्त्र बस करो अध्ययन।



चुनाव

बससे उतरा, लंकामें थी जोरोंपर चुनावकी चरचा
बरस पड़ा सरपर खचियाभर ऊपरसे चुनावका परचा।

लंकामें बमबारी कैसी? फिर कुछ बात समझमें आई,
सुना महाभारत औ रामायणमें है हो रही लड़ाई।

कालेज और युनिवर्सिटीमें है चुनावने रङ्ग जमाया,
दिल्ली और लखनऊसे है ताजा नया पार्सल आया।

इनमें नेहरू हैं, राजाजी, किदवाई हैं, पंत यहाँ हैं,
गोलवलकर हैं, गोपालन हैं—नेताओंका अन्त यहाँ है।

ठाकुर बने कांग्रेसी तो कायस्थ कम्युनिस्ट बन गये,
बाभन हुए स्वतन्त्र और सब भूमिहार सोशलिस्ट बन गये।

यह बिरादरीवाद नहीं है—यह भारतका मार्क्सवाद है
सभी वाद हैं निहित इसीमें—सर्वोदय-सर्वोच्चवाद है।

गरमागरम चाय पीते हैं गरम-गरम भाषण हैं देते
सिगरेटोंके धूँएमें नेतागीरीके अंडे सेते।

वाग्युद्ध, गाली-गुफ्ता, मुक्का-मुक्की—कुछ नहीं शेष है,
प्रेम युद्धमें औ चुनावमें सभी क्षम्य, सबका प्रवेश है।

उत्तर-दखिन, पूरब-पश्चिम प्रांत-प्रांतका अलग वेश है,
हम तामिल हैं, हम बङ्गाली—अपना-अपना राग-द्वेष है।

यह चुनावका चौराहा है—भैयाको होता कलेश है,
यह मलानका अफ्रीका या अपना भारत महादेश है।

सुना पुराने युगमें भी गुरुकुलमें छात्र लड़ा करते थे,
तीर और तलवार हाथ ले दिनभर ही झगड़ा करते थे।

वही देश है लीक पुरानी परम्परा निर्वाह कर रहे,
कागजकी तलवार हाथ ले, चौराहेपर आह भर रहे।

जली हुई सिगरेट हाथ ले, सरपर बैलटबाक्स धर लिया।
चिरंजीव लड़ते चुनाव हैं अखबारोंमें नाम कर लिया।

पढ़-लिखकर भी डिग्री लेकर आखिर तो बेकार रहेंगे,
इससे अच्छा नेता बनकर सेवा कर ही पेट भरेंगे।

'पालिटिक्स प्राफिटका बिजनेस' सबसे अच्छा बना 'कैरियर'
भैयाजी सपूतसे कह दो लड़ो चुनाव बनो नेतावर।



परीक्षा

यह बसन्तका मौसम देता जो सबको कविताकी दीक्षा,
मौज और मस्तीका सीजन—इधर शुरू हो गयी परीक्षा।
कौन महा मनहूस रहा जो शुरू कर गया यह परम्परा,
मदिराकी प्यालीमें जैसे इम्तहानका जहर है भरा।
बन्द हुए पिंजड़ोंमें तोते पाठ्यपुस्तकें खोल रहे हैं,
होस्टलमें सन्नाटा छाया जैसे उल्लू बोल रहे हैं।
सूने सिनेमा और रेस्टरां पानोंकी दूकानें सूनी,
कोयल कूक उठी कुंजोंमें पीर परीक्षार्थीकी दूनी।
रटते रहे सालभर बबुआ निम्मी, नरगिस और सुरैया,
इम्तहानमें परचा देखा तो चिल्लाये बप्पा-भैया।
पालिटिक्सके परचेमें तो लिख आये चुनावका भाषण,
फिलासफीमें सफा लिख दिया आवाराका जीवन-दर्शन।
हिस्ट्रीके परचेमें बस उद्धृत कर दिये डायरी पन्ने,
और मनोविज्ञान वही जो मनने कहा और लिखा कलम ने।
परचे देकर बाहर निकले, फूटा फिरसे नया तराना,
खतम परीक्षा, शुरू हो गया बबुआजीका दिर-दिर-ताना।
बिना पढ़े जो पास करायें, ऐसी कोई बात बताओ,
दिल्ली जाकर खतम परीक्षा करो, नया बिल पास कराओ।



इम्तहानको मारो गोली

एम० ए० बुद्धू, बी० ए० बुद्धू
एम० एस० सी, बी० एस० सी० बुद्धू,
डिग्री और बिना डिग्री के
डाक्टर और प्रोफेसर बुद्धू,
रहे जनम भर भाड़ झोंकते
कभी अकल की गांठ न खोली
इम्तहान को मारो गोली।

मेहनत करनेवाले बुद्धू
सदा काटते रहे घास हैं,
प्रोफेसर को ट्युशन् दे दो
एम० ए०, बी० ए० तुरत पास हैं।
पास कराने की गारंटी—
दो सौ रुपये की है बोली!
इम्तहान को मारो गोली।

सरविस का यह गेटपास है
डिग्री ले लो कामचलाऊ,
पब्लिक सर्विस कमिशन में
यदि निकले कोई चाचा-ताऊ
पांचों घी में और कड़ाही में
अपनी तकदीर डुबोली !
इम्तहान को मारो गोली ।
सदा फेल कुछ होने वाले
अच्छे दिन अब 'पास' करेंगे,
बुकके बदले मिलन-विरह का
होस्टलमें अभ्यास करेंगे,
युनिवर्सिटी से निकलेंगे लेकर
केवल जम्पर-चोली
इम्तहान को मारो गोली ।
मैं भी मेहनत से घबराता
इम्तहान में पार न पाता
एक चाय, दो दावत में ही
डिग्री का प्रमाण ले जाता ।
किस मनहूस कमीशन ने है
सारी पोल हमारी खोली,
इम्तहान को मारो गोली ।



कनवोकेशन !

नगवाका त्योहार निराला, भैयाजी यह कनवोकेशन।
दूकानोंपर चहल-पहल है, सड़कोंपर मोटर संघर्षण।
राजा, मन्त्री, पीर, बवर्ची, एम० एल० ए० के होते दर्शन।
नये डाक्टर, डिगरीदार मरीजोंका अद्भुत सम्मेलन।
कनवोकेशन !

कनवोकेशन वीक—नित नये कपड़ोंके स्टाल खुल रहे।
नगवा और नगरके दर्जी कनवोकेशन सूट सिल रहे।
रेस्ट्रां, सिनेमा, सैलूनोंमें नये-पुराने मित्र मिल रहे।
गाली देकर नमस्कार होता है फिर तब प्रेमालिंगन।
कनवोकेशन !

नये ग्रेजुएटको डिगरी लेनेकी होती है बीमारी।
नयी बहू-सी कनवोकेशनकी करते हैं ये तैयारी।
नया सूट और चेहरेसे जूतेतकको है पालिश मारी।
नयी हजामत, दोहरी शेविंग, पौएड स्नोका गहरा घर्षण।
कनवोकेशन !

यह कनवोकेशन जुलूस है, कैसी इसकी चाल अनोखी।
रंग-बिरंगे चोंगा पहने सरपर रखे औंधी टोपी।
लाट पादरी भेंड़ चराकर लौटे जैसे ओढ़े घोंपी।
काशी बनी पोप नगरी है, महापोपका महा प्रदर्शन।
कनवोकेशन !

याकि दलाई लामा हैं दलसहित कहीं तिब्बतसे भागे।
कुलपतिजी चलते हैं जैसे पंछुए लामा आगे आगे।
पीछे-पीछे डीन-डाक्टर जैसे चलते हैं 'बुल-दागे'।
यू० टी० सी० वाले बूटोंसे करते चलते हैं संघर्षण।
कनवोकेशन !

एम०ए० देखे, बी०ए०देखे, एम०एस०सी०, बी०एस०सी देखे।
डाक्टरेटके रोगी देखे, बैदराज बी० एस० सी० देखे।
खेतीके पण्डित सूटोंमें, इंजीनियर स्वदेशी देखे।
ऊँटोंमें कुछ ऊँटनियाँ भी करती चलती अमृत-वर्षण।
कनवोकेशन !

लो मिली किसीको सनद, किसीको नया-नया पदभार मिला।
केवल बेकारी मिली किसीको, सरविसका लो तार मिला।
प्रेयसिका दर्शन मिला, किसीको प्रेमीका उपहार मिला।
भैयाकी आखें मिलीं, मिला संकटमोचनका दलबेसन।
कनवोकेशन !



न गच्छेत गर्ल्स स्कूलं !

शनिवारकी संध्या थी, फुरसत थी, थोड़ा था उदास मन
बच्चोंने ला दिया हाथमें वार्षिकोत्सवका आमन्त्रण ।
　　पत्नीका आदेश हुआ मैं बाहर बहला आऊँ कुछ क्षण
　　उनको हलका-सा जुकाम था, चला अकेला आनन-फानन ।

कालेजके दरवाजेपर थे खड़े हुए दो रक्षा-प्रहरी
छीन निमन्त्रणपत्र हाथसे करते छान-बीन थे गहरी ।
　　इनमेंसे सरदार एक थे मुझको तुरत द्वारपर रोका
　　'किस कक्षामें पढ़ते हो तुम'—हुआ महादेवीको धोखा ।

'कालेज छोड़े हुए दो दशक अब छात्रोंका पिता मात्र हूँ'
शिक्षकका भी शिक्षक सम्पादक हूँ समझीं, नहीं छात्र हूँ ।
　　'सम्पादक हो पर लगते तो नहीं'—महादेवी बोली झट
　　'अच्छा फिर बताइये क्या हूँ'—चोर, चंट, चाइयाँ, गिरहकट ?

सम्पादक हूँ—सींग नहीं है, पूँछ नहीं है, सूट नहीं है
धोती कुरतेमें आया हूँ शक है कोई ऊँट नहीं है ।
　　पहलेसे सूचित करतीं तो अपने संग सबूत भी लाता
　　नगरपालिकासे लाकर उम्र सर्टिफिकेट दिखलाता ।'

मेरा रौद्ररूप देखा तो तुरत महादेवीजी पिघली
माफी माँगी, साथ ले गयीं बैठाया दे कुर्सी अगली।
प्रथम दृश्य फाटकपर देखा अरे अभी बाकी था नाटक
रंगमंचपर शुरू हो गया अंग्रेजीका ऊटक-नाटक।
छात्राओंको देखा मैंने चुरुट और सिगरेट दबाये
यह केवल अभिनय था भैया देख रहे बैठे मुँह बाये।
चले गये अंग्रेज छोड़कर अंग्रेजी औ नकली मेमें
भारतकी ये भूली भेड़ें रह-रहकर करती हैं मैं-में।
इन भेड़ोंको कौन बताये सही रास्ता भारतका स्वर
महिलाओंको राह बताये ऐसा कौन साहसी है नर?
भैया घरको चले देखकर भारतमें लंदनका नाटक
'अजी नमस्ते'—खड़ी महादेवी थीं और खुला था फाटक।

× × ×

जाओ मत एकला जहाँ हो श्रीयुत-श्रीमतियोंका उत्सव
पुरुष अकेला है उलूकसा—भैयाजीका यह कटु-अनुभव।



तुम आग पर चलो !

(पैरोडी)

लो आग लग रही है सारे जहाँनमें
आँधी भी जग रही है उधर आसमानमें
आहें सुलग रही इधर दिलके मकानमें
तुम एक सुन्दरीके नयन-बाणसे बिधे
तुम आगमें जलो जवान, आगमें जलो

तुम एक सुन्दरीके सुघर बाँहके तले
तुम एक सुन्दरीकी पलक छाँहके तले
तुम एक सुन्दरीकी सदा आहमें जले
तुम एक सुन्दरीको अपनी ज़िन्दगी बना
तुम स्वप्नमें पलो जवान, स्वप्नमें पलो

तुम स्वप्नमें पलो जहान जल रहा जले,
तुम फूलपर चलो जहान जल रहा जले,
तुम सेजपर खिलो जहान जल रहा जले,
तुम आँख मूँद लो जहान जल रहा जले,
तुम आँख मूँद लो, जवान, आँख मूँद लो

एक आग जल उठी है, एक तूफान-सा उठा,
दम घुट रहा है देशका ऐसा धुआँ उठा,
वह कौन खिलौना है जवान शिशुमचल उठा,
स्वाधीनता—पर तुम तो प्रेममें पिघल रहे,
तुम भाँग छान लो जवान, भाँग छान लो

ছেড়ছাড়

अपनी प्रेयसिकी पचासवीं वर्षगाँठपर

उम्र घटती जा रही है, हुस्न बढ़ता जा रहा है।
आसमाँपर हुस्नका यह चाँद चढ़ता जा रहा है।
चाँदसे चेहरेपर कितनी खूबसूरत झुरियाँ,
हुस्नकी दरियामें ज्यों सैलाब बढ़ता आ रहा है।
यह जवानीका चमन है और पतझरका समाँ,
फिरे नये पत्ते, नया अंकुर उमड़ता आ रहा है।
हुस्नकी भी जिन्दगीकी हर अदा तसवीर है,
दिल मुसविर खींचता और हुस्न बढ़ता जा रहा है।
दिलमें तूफाने समन्दर, आँखोंमें पीनेकी प्यास,
जिन्दगी भी एक नशा है दौर बढ़ता जा रहा है।
ढली दुनियाकी जवानी, हुस्नकी हो आयी शाम,
पर तेरी तसवीरपर रंग नया चढ़ता जा रहा है।
तू जवाँ है जबतक मेरे दिलमें है अरमाँ जवाँ,
तू हसीं है जबतक दिल पहलूमें तड़पा जा रहा है।
दिलकी इन गहराइयोंमें कौन उतरेगा जनाब,
नाज भी तो हुस्नका साया पकड़ता आ रहा है।
प्यारकी मंजिल नयी औ हुस्नकी अन्दाज उफ,
दिलसे पूछो क्यों तुम्हारा प्यार बढ़ता जा रहा है।
शैंपेनकी घूँट-सी मीठी तुम्हारी बर्षगांठ,
कहने दो दुनियाको 'भैयाजी' बिगड़ता जा रहा है।

प्रदर्शनी

दिलसे सौदा कीजिये आँखोंसे मेला देखिये,
बाबुओं और बीबियोंका ठेलम-ठेला देखिये।

फुलझरी भी देखिये और यह पटाखा देखिये,
दिलके अन्दर आतिशबाजीका उजेला देखिये।

कांग्रेसी कार्यकर्ता या वह हागा पत्रकार,
पानकी दूकानपर जिसको अकेला देखिये।

आप खद्दर पहनते हैं लीजिये स्टाल एक,
बैठकर दूकानपर परियोंका मेला देखिये।

पेट भरता हो न राशनसे तो आ जायें यहाँ,
चाय, बिस्कुट और चनेका है यह मेला देखिये।

खानेको है पान और 'पीने' का अच्छा इन्तजाम,
शामका है वक्त, है पीनेकी बेला देखिये।

छूटकर आये हैं सारे सूटवाले ऊँट भी,
खाली बी० एच० यू० के डबींका तबेला देखिये।

कोटका है क्रीज बिगड़ा, आयी साड़ी पर शिकन,
बीबी-शौहर बीच बच्चेका झमेला देखिये।

उठ गया परदा उधर दिल थाम बैठे शेखजी,
बढ़ गया आगे इधर मजहबका ठेला देखिये।

हाय इस उजड़े चमनकी कोई देखे तो बहार,
हजरते मजनूं जरा तिरपनकी लैला देखिये।

खूब है पेंटिंग मगर कमबख्त ये चेचकके दाग,
मारते हैं हुस्नके गागरमें ढेला देखिये।

भूल थी आये इधर बेहतर यही अब घर चलें,
अपनी बीवी देखिये और अपना मेला देखिये।

फाटकके बाहर जो निकला पर्स भी गायब मिला,
जेबमें पतलूनकी बाकी अधेला देखिये।



बे-बातकी बात

बातकी हो बात, फिर क्या बात है,
बात क्या, बेबातकी ही बात है।

कोरी बातें जो बनाना जानता,
आजकल भैया उसीकी बात है।

बात सुनकर भी जो करता बात है,
लग गयी तो फिर गधे की लात है।

बन गयी जो बात तो फिर बात है,
बिगड़नेपर बन न पाती बात है।

आदमी बन्दर ही रह जाता मगर,
काटनेकी जगह करता बात है।

बात बढ़-बढ़कर बनाने लग गये,
पूछिये मत यह बड़ोंकी बात है।

बातका संग्रह किया लेखक बना,
बना नेता, बातकी बरसात है।

भैयाजी कहते हो तुम कविता जिसे,
यह भी तो बेबातकी ही बात है।



दे दीजिये हुज़ूर मेरा इण्डिया मुझे !

आये जो लाट साहब घर मेरे देहात में,
ऐसी ख़ुशी हुई, कि ख़ुदा मिल गया मुझे !
जिन्ना से जेल में गया मिलने, मैं ख़्वाब में;
जी-भर जलेबियों का मिला नाश्ता मुझे !
मैं पाक बनाऊँगा इस हिन्दोस्तान को,
या पाक बनायेगा, यह हिन्दोस्ताँ मुझे !
चेहरे की दिवालों पे, दीवाली मनाता रोज़;
फिर भी 'वह' कह रहे हैं, क्यों 'उलटा-तवा मुझे !
'वह' सेब-जैसे गाल लिये मुस्कुरा पड़े,
देखा जो कल हुज़ूर ने हसरत-भरा मुझे !
'देहली' से 'वह' शिमले की तरफ़, झट-से चल दिये,
दिल ही जला रहा उन्हें, दिल का दिया मुझे !
आँखों में आ के रहिये, मेरा नैन ताल है,
इतनी-सी बात पे है, मिली गालियाँ मुझे !
मुझको पहाड़ पर वह बुलाते हैं बार-बार,
ला कर खिलायेंगे, क्या कोई कुलफ़ियाँ मुझे !

जाते हैं अकेले ही तो बा-शौक़ जाइये,
दे जाइये पैरों के लिए, बेड़ियाँ मुझे !
'बेबी' खिलाने जाते था बँगले पे 'बॉब' के,
बीबी की बद्दुआ से मिली बीबियाँ मुझे !
पूछा हुज़ूर ने, कि ये अण्डे कहाँ मिले,
बोला—हुज़ूर ने ही तो दी मुर्ग़ियाँ मुझे !
क्लब से जो नाच करके घर आये, हुआ सवाल !
लाये नहीं, कानों की मेरी बालियाँ मुझे ?
मरने का बहाना किया, आये न देखने,
लेनी पड़ेंगी और अभी, हिचकियाँ मुझे !
करता हूँ शायरी, तो मुहब्बत क्यों छोड़ दूँ,
वह भी समझ रहे हैं, कोई बेहया मुझे !
लड़ने में जो बिज़ी हैं तो मैं छेड़ता नहीं,
पर इतना तो न कीजिये अब, बेज़ुबाँ मुझे !
जी चाहे जितना लीजिये, चन्दा ग़रीब से !
दे दीजिये हुज़ूर, मेरा इण्डिया मुझे !!



यह तख्त औ यह ताज !

लोग कहते हैं कि हम आजाद हैं,
मान लेते हैं कि हम आजाद हैं।
शिकायत हरगिज नहीं है, अपना राज,
भूखों मरने की है आजादी तो आज ॥

लड़े थे जिनके लिये वे हैं वहीं,
बैठे जा नेताजी कुरसी पर कहीं।
पीठ पर जनताके चढ़के उठ गये,
सूरतें बदली और अब चेहरे नये ॥

अब जरूरत जनताकी क्या बोलिये,
जब जरूरत थी तो आगे हो लिये।
बिना मेहनत हमने जो पाया है राज,
भूल बैठे आ गया जो सरपर ताज ॥

उधर बढ़ती भुखमरी है औ अकाल,
हम बजाते जा रहे हैं अपने गाल।
काम पाते हैं नहीं बेरोजगार,
हर्ज क्या मर जायंगे यदि कुछ हजार ॥

रहनेको भी कौन देता है मकान,
क्या जरूरत आसमां है सायबान।

भूख लगती पर न मिलती रोटियाँ,
शोर करनेपर हैं मिलती झिड़कियाँ ॥

राज बदला, पर न बदला रंग-ढंग,
बस वही अफसर, रवैया, वही ढंग।
डाकुओंने भी बदल ली टोपियाँ,
मिल गया लाइसेंस चलती गोलियाँ ॥

बढ़ गयी पहलेसे ज्यादा चोरियाँ,
बन गयी है पुलिस भीगी बिल्लियाँ।
दूर जनतासे बहुत तुम हो गये,
जाके दिल्ली लखनऊ तुम खो गये ॥

हो मुबारक तख्त औ यह ताज भी,
पर सुनो जनताकी तुम आवाज भी।
अनसुनी तुम कर नहीं सकते इसे,
बे-सुने तुम रह नहीं सकते इसे ॥

इसीपर निर्भर तुम्हारा तख्त-ताज,
बेजुबां जनताकी ताकत है अवाज।
अब न समझो जनताको तुम सीढ़ियाँ,
दावतें खाओ, मगर दो रोटियाँ ॥



मुक्तक

आई० सी० एस० में आ गया हूँ मैं,
जीते जो स्वर्ग पा गया हूँ मैं,
बाप मुन्शी थे, मैं कलक्टर हूँ,
बापका बाप बन गया हूँ मैं।

गल्ला नहीं मिलता है तो भूखे रहिये,
कपड़ा नहीं मिलता है तो नंगे रहिये,
मुख बन्द है, जुबानपर भी ताला है,
मरते भी अगर हैं न किसीसे कहिये।

लक्षपति अब तो बन गया हूँ मैं,
चोर बाजारकी दया हूँ मैं,
धन कमानेमें पुराय पाप कहाँ,
लोग कहते हैं, बेहया हूँ मैं।

आंसूको पी रहे हैं तो बस गमभी खाइये,
सरकारको न गमकी कहानी सुनाइये,
कहते हैं मरनेवालोंको मिलता नहीं कफन,
मरनेके पहले आप कफन भी मंगाइये।

गांधीजी कहते—गांवमें जा बैल हांकिये,
बैठे हैं काम कुछ नहीं, चर्खा ही कातिये,
जब देखिये कंपोजिटर सरपर हुए सवार,
अखबारमें 'मैटर' नहीं, अफवाह छापिये।

छेड़छाड़

क्यों उतर आयें न कालीदास भी स्टेजपर
हम जयन्ती भी मनाते हैं सिनेमा-हॉलमें।

एक-दो भाषण हुए, दो-चार कवि आये गये,
एक हङ्गामा मचा साहित्यके पण्डालमें।

मिल गया मौका उधर दो चार स्कीमें बनीं,
मिल गयी गठरी इधर-चन्देके पहले 'काल'में !

आप तो चन्दा बटोरें—और हम भूखों मरें,
खूब हैं कविता सुनाते—भूखमें, दुष्कालमें।

आज गर काशीमें होते स्वयं कालीदास भी
छेत्रमें भोजन न मिलता, डूब मरते तालमें।

छप गया अखबारमें है नाम बस किस्सा तमाम
चार प्याली चाय पीनेको मिली स्टालमें।

याद कर गर महाकविको पीट लेते ढोल हम
कम नहीं साहित्यकी उन्नति हजारों सालमें।



नया मोरचा

बड़े बेआबरू होकर तेरे कूचेसे सब निकले।
हम अपनी आबरू लेकर तेरे कूचेसे हैं निकले।

सफेदी चेहरेपर है औ न कपड़ोंपर सियाही है।
निकल आये जो काजल कोठरीसे साफ और उजले।

जो पीछे रह गये उनको अजी छोड़ो भी जाने दो।
अरे लैला है कुरसी, खुद मुहब्बतके बने पुतले।

वे कहते हैं कि नेहरूजी मुझे जाने नहीं देते।
अरे भैयाजी क्या समझो मुहब्बतके हैं ये मसले।

कोई पूछे कि क्यों बागी बने नारे लगाते हैं
अरे बच्चे ही हैं होंगे खिलौनेके लिए मचले।

गलीको छोड़ आये सड़कपर पीछे नजर डाली
औ आंखें मूंदकर बस तख्ते-दिल्लीकी तरफ उछले।

मकां बदला, निगाह बदली, खयाली रास्ते बदले,
बदल जाती है दुनिया पर न वे बदले, न हम बदले।

है मौसम आ गया लो दोस्त सब तालाबसे निकले।
नयी बातें, नये नारे, बजाते गालके तबले।

लो करके बन्द दरवाजा और खिड़की बैठे 'भैयाजी'
खड़े चिल्ला रहे बाहर भिखारी वोटके कंगले।



छेड़छाड़

मेरे सरकार योरपमें किसी हिटलर से लड़ते हैं,
इधर हम भूखसे, भगवानसे, किस्मतसे लड़ते हैं।

हमारा दिल है दिल्लीमें मगर हम रूस जाते हैं,
जो बसते फूसमें उनसे भी लेकर घूस खाते हैं।

बुरा क्या लीडरीमें हम जो कुछ पैसे कमाते हैं,
नमक खाते हैं हम सरकारका—इनआम पाते हैं।

हमारा दिल है सोनेका हुकुम पाते ही गलते हैं,
कि जिस साँचेमें ढालो हम उसी साँचेमें ढलते हैं।

हमेशा जी-हजूरीका जो हम चोंगा पहनते हैं,
बिगड़ते हों मेरे सरकार लेकिन हम तो बनते हैं।

न आ जाये कोई मेहमान महँगीमें—वो डरते हैं,
करेगा क्या कोई दुनियामें खातिर-हम जो करते हैं।

सितम है कहते हैं, हम तो बड़ी तकलीफ पाते हैं,
यही क्या कम है, हम खाते हैं गम-उनको खिलाते हैं।

उधर गेहूँके बोरोंसे नये गोदाम भरते हैं,
इधर है पेटका गोदाम खाली आह भरते हैं।

सुना है भोगके 'राशन' से अब भगवान डरते हैं,
तो मुश्किल ही है जीना अब तो 'भैयाजी' भी मरते हैं।



चिकोटी

लड़ें कश्मीरमें वो या कि हिंदू-कुशकी चोटी से।
हमें मतलब है अपनी लीडरी से, दाल-रोटी से।
लगा रोटी पर मक्खन है, और मक्खनमें भी मिश्री है,
खड़ी है कार बाहर पालिटिक्समें लाल गोटी है।
नहीं मालूम था यह लीडरी भी रंग लायेगी,
किया आरंभ जिसका जेलमें केवल लँगोटी से।
तिरंगेकी कसम कहता हूँ मानो या न मानो तुम।
मिनिस्टर बन गये जो हम—खुशामद की ही घोंटी से।
कि हमने लाठियाँ और जेलकी है रोटियाँ खायीं,
किया है त्याग हमने, क्यों न खायें 'घूस' रोटीसे
करो यह बन्द हैजा-प्लेग, सूखा-बाढ़ की बातें,
अभी नेता जी उलझे शोरवेसे और बोटीसे।
मिली कुर्सी जरूरत अब न जै की है, न जनता की
न फुरसत है जो सर मारें हम इनकी अक्ल मोटी से
बड़े हो मूर्ख जो अब तक भी तुम चर्खा चलाते हो,
करो बिजनेस, शुरू कर दो किसी दूकान छोटी से।
चरो जीभर कि सारा हिंदका मैदान अपना है,
डरो आलोचनासे मत, न भैया की चिकोटी से।



आकांक्षा

मेरे 'लव' का 'प्रपोज़ल' गर कहीं मन्ज़ूर हो जाता।
तो उनके साथ 'कौंटीनेण्ट' का एक 'टूर' हो जाता॥
दिले नाज़ुक को उस बेदर्द ने इस ज़ोर से पटका।
कि गर फ़ौलाद भी होता तो चकनाचूर हो जाता॥
वो किस अन्दाज़ से मुझको उठा कर मुँह तक ले जाते।
इलाही, मैं भी जँघई का जो मोतीचूर हो जाता॥
सुबह से शाम तक परदा, अरे शब में भी अब परदा।
बहुत अच्छा था दोनों आँखों का मैं सूर हो जाता॥
बहुत जब खुश हुए अब्बामियाँ, सौंपा तुम्हें मुझको।
मगर जोड़ी तो तब मिलती जो मैं लंगूर हो जाता॥
बहुत अच्छा किया जो साथ तुम उनको नहीं लाये।
नहीं उनकी मुहब्बत के नशे में चूर हो जाता।
अगर भैया जी तेरा नाम वह भूले भी ले लेते।
हसीनों की भरी महफ़िल में तू मशहूर हो जाता॥

—

छेड़छाड़

लड़ाई छेड़ती बीवा, मियाँजी भूखों मरते हैं,
तवेका मुँह है काला, लाला रोटीको तरसते हैं।
लगी है भूख—भैयाजी जो कहते उनसे धीरेसे,
तो तोपोंसे गरजते हैं, बमोंसे वे बरसते हैं।
इधर खतरा, उधर खतरा, नहीं खतरेसे घर खाली,
कि हिंदुस्तानमें कुछ भूले-भटके ऊँट बसते हैं।
रुका है कारवाँ क्यों हिंदमें पश्चिम सवारोंका,
अरब औ' मिश्र जानेके हजारों अब भी रस्ते हैं।
हम अपने घरमें नौकर—क्यों न हम घरके बने मालिक ?
वह सुनकर मुस्कराते हैं और उनके 'मित्र' हँसते हैं।
कहा मैंने जो साहबसे कि रुपये सेर है गेहूँ,
तो कहते हैं कि पत्ते-घास तो गेहूँसे सस्ते हैं।
वह दुनियाँके लिए लड़ते हैं—दुनियाँमें है 'एम्पायर'
इधर हम भूखे हैं—औ' दाने-दानेको तरसते हैं।
उधर बम, टारपीडो, टैंक, एयरोप्लेन औ' गन हैं,
अकेले इधर हम हैं, कलम है, कागजके दस्ते हैं।
अजब उलझन है दिलमें औ' गुलाबी आँखमें डोरे,
कि इतनी दूरसे 'भैया' उलझते और फँसते हैं।

छेड़छाड़

भूले-भटके कभी घरपर जो चले आते हैं,
खुशीके मारे हम फूले नहीं समाते हैं।

अपनी आँखोंके इशारेसे वह बुलाते हैं,
गुलाबी डोरोंमें हम बँधके चले आते हैं।

जमी हुई है जबसे जेबपर नजर उनकी,
डरते-डरते ही उनसे हाथ हम मिलाते हैं।

हमारे खानेको गम है, अगर नहीं गेहूँ,
आप गेहूँके साथ-साथ घूस खाते हैं।

रोज ही आप रईसोंके घर दावत खाते,
हम तो घर बैठके एकादशी मनाते हैं।

उनकी आँखोंसे बस दो घूँट लेके पीते हैं,
भूखे रहते हैं, हम 'राशन' भी नहीं पाते हैं।

देख चन्देकी रकम रुक गयी दिलकी धड़कन,
खुदाके घर अब दुआ आपकी मनाते हैं।

छेड़छाड़

जनेऊ जेबमें रख, गांधी टोपी ताकपर धरकर,
मिनिस्टर बन गये पंडित तो अब 'घर'का दिवाला है।
इशारेपर जो नाचे वह है बंदर—हम मिनिस्टर हैं,
कि नेहरू खुश हैं, सूबेमें हमारा बोलबाला है।
यह कह दो भैयाजांसे जाके बस जायें हिमालयमें,
यहाँ कांग्रेसी 'ऊँटोंका चमन' अब बननेवाला है।
वह घरमें घुसके घायलके लिए हैं माँगती चंदा,
मैं कहता हूँ—मैं घायल हूँ, मेरे दिलपर भी छाला है।
सुबह पढ़ने लगी अखबार मेरी श्रीमतीजी भी,
यह ट्यूनिसकी लड़ाईमें गया जो मेरा साला है।
लड़ें वह और हम भूखों मरें—कैसी मुसीबत है,
यही मालिककी मर्जी है—जुबाँपर बन्द ताला है।
नहीं मिलता है जो गेहूँ तो क्यों हैरान हो भैया,
सुना है आदमी भी घास-पत्ते खानेवाला है।
मरा करता था पहले मैं, सुना है मर रहे वे भी,
मेरा माशूक गेहूँके लिए ही मिलनेवाला है।
यह दिलकी रह गयी, दिलमें औ' सोना हो गया नब्बे,
कहो जा लाटसे 'भैयाजी' शादी करनेवाला है।

—•—

'विक्ट्री डिनर' पर जो किया फ्रीडमका तक़ाज़ा
कहने लगे---मदद की जरूरत नहीं रही।
'खुशियाँ मनाओ—और धन्यवाद दो हमें'--
सरपर तुम्हारे अब कोई आफत नहीं रही।

भैया स्वराज्य लेके भला क्या करोगे अब
'एटम' के आगे कोई हिफाजत नहीं रही!
अच्छा है सौंप दो हमें रक्षाका भार भी
मेरी तुम्हारी अब तो अदावत नहीं रही,

'ब्लड बैंक' में जो दे दिया हमने जिगरका खून,
कहने लगे कि कोई शिकायत नहीं रही।
दिल तोड़ कर वे कहते हैं भैयाकी कलममें
पहलेकी शोखी और शरारत नहीं रही।

× × × ×

रंग वही जो कपमें है केटलीमें है
स्वर वही जो डफमें है, डफलीमें है
एकसे दोनों ही हैं अपने लिये
खून जो चर्चिलमें है, एटलीमें है।



राशन-कंट्रोल

भैय्या मुझे मकान चाहिये !

पड़ा हुआ हूँ जाड़े में भी,
छत के नीचे सायबान में
दूर कहीं जलती है बिजली
किस खुशकिस्मत के मकान में।
सरदी न्यूमोनिया न ब्यापे, भगवन ऐसा त्राण चाहिये।
भैय्या मुझे मकान चाहिये !

एम० एल० ए० औ मिनिस्टरों के
दरवाज़ों की खाक छान कर।
पगड़ीवाले कोठीदारों से
भी आखिर हार मान कर।
मरने को ही नहीं अरे अब रहने को भी स्मशान चाहिये।
भैय्या मुझे मकान चाहिये !

होटल और धरमशाले भी,
शकल देखकर घबराते हैं।
रिश्तेदार नगर के सारे,
आँखें नहीं मिला पाते हैं।
आज लखनऊ कहता है कि मुझे नहीं मेहमान चाहिये।
भैय्या मुझे मकान चाहिये !

कोठीवाले बंगलेवाले,
सोते हैं सब टाँग पसारे।
यहाँ ठिठुर कर रात काटते
गिन गिरजा के घंटे, तारे।
आसमान के नीचे सर पर मुझको एक वितान चाहिये।
भैय्या मुझे मकान चाहिये!

घर के लिए हज़ारों बातें—
बड़ों-बड़ों की बात सही है।
अगर नहीं मिल सकता है तो,
अंतिम एक उपाय यही है—
भैय्या इसी लखनऊ में अब मुझको कन्यादान चाहिये।
भैय्या मुझे मकान चाहिये!



चीर हरण

(नवीन संस्करण)

धोती दिलवादो,
नटखट हे वृषभानु दुलारी,
तुमने सबकी लाज उतारी,
धोती ले कँट्रोल-कदम पर बैठी मुसका दो,
धोती दिलवा दो !

तुम हो सारे ब्रजकी रानी,
रोटी-कपड़ा राशन दानी,
कैसे रुठूं तुमसे मीठी बातोंसे फुसला दो,
धोती दिलवा दो !

अब तो हूँ बस हाथ तुम्हारे,
मरा जा रहा लाज के मारे,
बना आदि मनु कैसे बाहर आऊँ बतला दो,
धोती दिलवा दो !

हम नंगे हैं, तुम हो हँसती,
नग्न घाव पर नमक छिड़कती,
तुम निर्लज्ज बनी बैठी हो बेच न शर्म हया दो,
धोती दिलवा दो !

निकल पड़े यदि नंगे बाहर,
शोर मचेगा सब दुनिया भर,
लाज तुम्हारी ही जायेगी, धोती भिजवा दो,
धोती दिलवा दो !

यदि धोती पर खास नजर है,
नग्नवादका भी तो डर है,
आंचलके इक टुकड़ेसे लंगोटी मिलवा दो,
धोती दिलवा दो !

दे दो धोती छोड़ बहाना,
जुर्म आजकल वस्त्र छिपाना,
पर तुमको किसका डर रानी, परमिट बनवा दो,
धोती दिलवा दो !

जब्त किया धोती-पाजामा,
मुझको समझ सेरेत्से खामा,
लंडन के नूडिस्ट नगरमें जलदी भिजवा दो,
धोती दिलवा दो !

यह जो कपड़ेका अभाव है,
नग्नवादका ही प्रभाव है,
नव फैशनको जन्म दे रहा जगको बतला दो,
धोती दिलवा दो !

कवि पुकार सुन कविता डोली,
भोली नवल राधिका बोली,
भैयाजी धोती चाहो तो एक गीत गा दो,
धोती दिलवा दो !



राशन-गीत

प्रभूजी राशन दिलवादो
राशन अरज लिये हाथोंमें आया द्वार तुम्हारे,
करुणा गीत गा रहा कबसे भये न दरस तुम्हारे,
राशनदेव शरण आया हूं, दया करो भिक्षा दो,

राशन दिलवादो !
पंक्तिबद्ध हैं खड़े सड़क पर कबसे आस लगाये,
राशन एक कृष्ण औ हम सब बने गोपिकाएँ,
गेहूंके बदले गीताकी प्रतियां बंटवादो,
राशन दिलवादो !

गल्लेका अभाव है आलूको उबालकर खाओ,
गीत विटामिन गाओ एकादशी कथा कहलाओ,
पेट भरा बातोंसे दावत-न्यौता भिजवादो,
राशन दिलवादो !

दो दिनसे जलपान मित्र-घर पूरक-उदर बना है,
चाय-टोस्ट-निमकीन-मिठाईसे ही पेट तना है,
कहा मित्र-पत्नीने बाहर तख्ती लटकादो,
राशन दिलवादो !

होटल, हलवाईपर हमला करके हार चुका हूँ;
अब तो अपना प्रेम-भागी राशनपर वार चुका हूँ,
सभी कपाट बंद अपना दरवाजा खुलवादो,
राशन दिलवादो !

पहलेसे मालूम होता जो यह गड़बड़-घोटाला,
जमींदारको ससुर बनाता, टी० आर० ओंका साला,
भूल सुधार हो सके तो ब्रह्मासे कहलादो,
राशन दिलवादो !

आजसे होती शुरू है राशनिंग !

खाइये, कम खाइये, गम खाइये
आजसे होती शुरू है राशनिंग।
गाइये, गुन गाइये, सरकारके
आजसे होती शुरू है राशनिंग।
बन गयी सरकार माई-बाप है।
धुल गया सब आपका अब पाप है।
पेटकी बच्चे भी क्यों चिंता करें
कर रही सरकार अपने आप है।
इस नयी माँसे न यूँ घबड़ाइये।
बंद करके नयन 'राशन' खाइये।
अन्नप्राशनका दिवस शुभ आज है,
राशनिंगके गीत कविजी गाइये।
रूसकी नवक्रांतिका दिन आज है।
हिंदमें भी शुरू लेनिन-राज है।
सेठजी ले तोंद तीरथको चले,
बेचती सरकार खुद अब नाज है।

पाव भरमें पेट भर अब खाइये।
और मन-भर गीत गाते जाइये।

एक टुकड़ा फेंक कर मैदानमें,
जर्मनी, जापानको तरसाइये।

अगर मोटे हैं तो टांटा आयेगा।
राशनिंग कुछ वजन कम कर जायेगा।

गर हुए दुबले तो कुछ चिंता नहीं।
पाव भर ही आपको खा जायेगा।

भूख है इक आह, राशन वाह है।
पेट भरनेकी यह सीधी राह है।

मर न जायें और जीते भी रहें,
एक बस भैयाजी इतनी चाह है।



भैया अधिक अन्न उपजाओ

ग़मले में तरकारी बोओ, कद्दू खूब उगाओ।
कुम्हड़ा, कटहल और करैला खाकर खूब अघाओ॥
गेहूँ में घुन लगा, न चावल की तुम बात उठाओ।
कलियुग का अमृतफल दुर्लभ बस 'टैपियोका' खाओ॥
केला, ककरी, सुर्ख टमाटर लेकर खूब चबाओ।
फलाहार सर्वोत्तम भोजन—सबको पाठ पढ़ाओ॥
आधे दिन उपवास करो फिर कंदमूल फल खाओ।
गल्ले का अभाव है—गल्ला खाओ नहीं, बचाओ॥
गंगाजल बस पियो, हवा से अपना पेट भराओ।
चाय पियो, वक्तव्य निकालो, गिन-गिन दावत खाओ॥
यह स्वराज सुख भोगो भैया गोविन्द के गुन गाओ।
भैया अधिक अन्न उपजाओ।



देखो अमेरिकासे गेहूँ वो आ रहा है !

गेहूँ नहीं मिलता है, चावल नहीं मिलता है
भैयाजी जिसको देखो हल्ला मचा रहा है।
यह देश भुक्खड़ोंका, भरपेट कब मिला था
क्यों आसमान नाहक सरपर उठा रहा है।
उपवास व्रत करो सब, जब भूख लगे गाओ
कीर्तन-भजनका भैया नुसखा बता रहा है।
गंगामें कूद जाओ, परलोकको बनाओ
देखो पुलिस अफसर भी रस्ता दिखा रहा है।
दो घूंट पी मिनिस्टर दावतमें कोसते हैं
स्वागतके बाद कोई तबर्रा सुना रहा है।
कैसी कृतघ्न जनता—एहसान भूलती है,
भैया स्वराज्य-गरिमा भरपेट गा रहा है।
सीधी-सी बात भी क्यों आती नहीं समझमें
गल्लेकी कुछ कमी है—भारत मँगा रहा है।
भूखे हो लेके थाली बैठो रसोईघरमें
देखो अमेरिकासे गेहूँ वो आ रहा है।

स्फुट

कुंडलियाँ

चाँदीमें गुन बहुत हैं, चाँदीका है ठाठ।
चाँदीकी नौका चलत है सट्टाके घाट।
है सट्टाके घाट, ठाठसे खेलहु सट्टा।
अफसर भी तो चकाचौंध देखत 'सिल' बट्टा।
टुकड़े गा कविराय बनि गये कविसे बाँदी।
तुकबन्दीके ठाठ! बटोरहु कविजी चाँदी।

× × × ×

राशनका शासन मधुर, राशनमें है प्यार।
लाउडस्पीकर हाथ ले बोल रही सरकार।
बोल रही सरकार, सुनहु हे धूरके बाटी।
राशन गल्ला खाहु—धूर हो चाहे माटी।
कह भैया कविराय, पेटपर भी अब शासन।
इतना भी अधिकार छीनने आया राशन।



कहि न जाय का कहिये ?

प्रभु जी कहि न जाय का कहिये ?
देश भक्तिकी हाट लगी, बहती गंगामें बहिये।
टके सेरपर त्याग बिकत है काहे घाटा सहिये।
राजदूत, मंत्री, एम० एल० ए० अरे औरि का चहिये।
मुद्रामोह, कामिनी-कुन्तल उरझि-उरझिके रहिये।
क्षीर सिंधुकी दूध-दही सब नेता बनकर महिये।
सदा मुनाफाके सौदेको राजनीति अब कहिये।
आपन आम और कै इमली यही नीति बस गहिये।
सत्य अहिंसाकी वै बातें—चुप ह्वैके बस रहिये।
प्रभुजी कहि न जाय का कहिये।



छोटे नेता

बालगोपाल हजारन डालत कर नवनीत लिये,
ऐसे परम पूज्य नेताके प्रथम पाँव परिये।
चढ़ी मोटाई मोटे तन पै गाल भये गोहरा,
ऐसे बने महाप्रभु जैसे हो कोई बोहरा।
शीश कैप, कर बेग, कारपर करत रहत दौरा,
घोर जेठ दुपहरिया पहुँचे जा चौरीचौरा।
फोटो और वक्तव्य छपावे मौके-बेमौके,
भाषण दे तो ऐसा झपटे जस बिलरा झौंके।
जनता आगे खीस निपोर जैसे हो सुअरा,
और बड़े नेताके पैखाने पर दे पहरा।
साल छमाही मोटर बदले, लें रईस छकड़ा,
कहैं कबीर सुनो भई साधो-नेता होय बड़ा।

भैयाजीकी सीख

चन्दासे बचना हो भैया कोई नयी संस्था खोलो,
जब कोई चन्दा माँगे तो पहले उसकी जेब टटोलो।
मित्रोंसे बचना चाहो तो लो उनसे मँगनी-उधार तुम,
पास नहीं फटकेगा कोई चाहे रखो खुला द्वार तुम।
पत्नीसे बचना हो तो बस अच्छे 'आर्य-पुत्र' बन जाओ,
मित्रों-संग सिनेमा जायें, घरपर बच्चे बैठ खिलाओ।
गुरुओंसे बचना जो हो तो मूँड़ो चार नये तुम चेला,
गुरुडमकी गीता बाँचो, है मूर्ख वही जो रहे अकेला।
राजनीतिसे बचना हो तो खोलो नया धर्मका खाता,
धर्मगुरू है अँगूठेपर दुनियाभरको नाच नचाता।
कांग्रेससे बचना हो तो फौरन कम्युनिस्ट बन जाओ,
कामरेडसे बचना हो तो अमेरिका जाकर बस जाओ।
अगर पुलिससे बचना है तो गांधीटोपी दे तन जाओ,
सी०आई०डी०से बचना है तो सी०आई०डी० बन जाओ।
नेताओंसे बचना है तो भैया सम्पादक बन जाओ,
एक टिप्पणी लिखकर कह दो दफ्तर आकर पूँछ हिलाओ।
अगर घूससे बचना है तो बन जाओ नौकर सरकारी,
अगर भूखसे मरना है तो भैया बन जाओ अखबारी।

नया रोजगार

बहुत दिनोंपर मिले राहमें भैयाजीके मित्र पुराने,
घर ले आये, शुरू हो गया—'भूल गये होंगे' के ताने।
'भाभी कैसी हैं ?' 'बच्चे अच्छे हैं ?'—मित्र बने अनजाने,
चाय-पान-सिगरेट अनन्तर घरके किस्से लगे सुनाने।
'अच्छा तो चलता हूँ'—कहते, रुककर, जैसे सोच बहुत है,
'सौ रुपये तुम दे सकते हो'—लगता था संकोच बहुत है।
'सौ रुपये ?'—लो तुम्हीं बताओ कैसे दे सकता उधार हूँ,
है अन्तिम सप्ताह माहका, फिर हिन्दीका पत्रकार हूँ।
उत्तर पाकर उतर गया मुख, बोले धीरेसे हताश हो,
'अच्छा भाई जाने दो पर क्या तुम दे सकते पचास हो ?
मेरे 'ना' करनेपर बोले—'मित्र बड़े संकटमें मैं हूँ,
पत्नी भरती अस्पतालमें, तुमको कैसे अधिक कष्ट दूं।
दस रुपये यदि दे सकते तो इंजेक्शन खरीद लेता मैं,
मित्र तुम्हें भी रोम-रोमसे सचमुच धन्यवाद देता मैं।
पिघल गया मैं, द्रवित हुई पत्नी और रुपये तुरत दे दिये,
मित्र महोदय नमस्कार कर, नोट संभाला तुरत चल दिये।
दस रुपये दे हम अपनेको 'भैया' दानी मान रहे थे,
देखा संध्या समय मित्र होटलमें बैठे छान रहे थे।



दावत-अदावत

रोटरी क्लबका डिनर था मिला भैयाको निमन्त्रण,
पत्रकारोंको बुलाते सब समझ कलियुगी ब्राह्मण।
चायपर, दावत कहींपर तुरत भैया दौड़ जाते,
पेटभर जलपान, मुखमें पान भैयाजी अघाते।
चाय पीकर पंक्तियां दो चार लिखनेमें हरज क्या?
और बिना जलपान कोई खबर क्यों छापूं, गरज क्या?
चाय बन जाती खबर जलपान जो है करा देता,
बन गया एस. पी, एम. एल. ए. देशसेवक, महानेता।
दावतोंकी कुछ न पूछो लग रहा है रोज तांता,
श्रीमतीजी रुष्ट हैं मैं कभी घरपर खा न पाता।
चाय-दावतमें ही भैया जिंदगी हो गयी आधी।
हो गया मस्तिष्कको गठिया, बदन हो गया बादी।
नित नयी दावत, कहीं है जन्म-मुण्डन, कर्ण-छेदन,
या कहीं कोई एलेक्शन--पालिटिक्सका व्यूह-भेदन।
मिल गयी अब जमींदारों, रईसोंको थोड़ी फुरसत,
'स्वयं' सेवक रहे अबतक लगी सेवाकी नयी लत।
सेठ लौकीचन्द जाकर गाँवमें सेवा करेंगे,
और श्री कुष्माण्ड अपने बदनकी चरबी हरेंगे।
रायसाहब डनलोपिल्लो अब करेंगे देशसेवा,
जेबमें स्पीच रख भैया उठे करके कलेवा।
दावतें खा लेखनीको हो गया है कांस्टीपेशन,
दावतें दे हम बनाने जा रहे हैं नया नेशन।
दावतें दे बन गये घुरहू मिनिस्टर, खाते दावत,
हो गयी अब भैयाजीको दावतोंसे बस अदावत।

सरदर्द

कैसी घनीभूत पीड़ा है प्रिय मेरे मस्तष्कमें छाई,
मुझे स्वास्थ्यपर कविता लिखनी थी बरबस आरही रुलाई।
काई हटी, फटा परदा दिमाग का, निकली पीड़ा सरिता,
उतर ताड़ से लगी नाचने कथाकली का नृत्य ताड़िका
यह कपालकी क्रिया हो रही और प्रेमी गृद्धोंका कलरव,
लिये खोपड़ी चला कहीं कोई कापालिक समझ मुझे शव।
यह कोई अदृश्य प्रेमिका मार रही स्मृतिका कोड़ा,
या कपारफा भूत समझकर रेसकोर्स दौड़ाता घोड़ा।
लगता है मोहनबगानकी टीमकर रही कंदुक क्रीड़ा,
या दिमागमें दीप जला कोई कवि जगा रहा है पीड़ा।
कोई नया दूरमुद्रक मेरे कपार में करता टंकण,
या कोई कर्कशा पड़ोसन पटक रही है सरपर कंकण।
बुद्धिदान का यज्ञ हो रहा या हो रही उपल की बरसा,
लगता है हड़ताल हो गयी या बिगड़ा दिमाग का चरखा।
या कोई नवाब खोदता है पुरखों का गड़ा खजाना,
नौसिखुआ संगीत का प्रेमी सीख रहा है दिर-दिर-ताना।
कोई वृद्ध वकील तार्किक खाल बाल की भेद रहा है,
पुरातत्त्व का खोजी छेनी लिये खोपड़ी छेद रहा है।
मधुर-मधुर पीड़ा देकर कवि, देवदास मत मुझे बनाओ।
पत्रकार हूँ जीने दो, मत मेरी नौकरी छुड़ाओ।
जो मेरे सर पर सवार है, यह कपार का भूत उतारो,
गीध-अजामिल, गजको तारा, मैं जानूँ जब मुझको तारो



फिल्मी गाना

नींद खुल गयी
सुबह हो गयी।
फिल्म भैरवी
शुरू हो गयी—फिल्मी गाना!

घरमें सुन लो
बाहर सुन लो
सड़कोंपर
दफ्तरमें सुन लो—फिल्मी गाना!

शौचालयमें
सचिवालयमें
विद्यालयमें
देवालयमें—फिल्मी गाना!

कथा-कीर्तन
मूंडन-छेदन
कनवोकेशन
कवि सम्मेलन—फिल्मी गाना!

गुरुद्वारामें
गिरिजाघरमें
मस्जिदमें औ
सिनेमा घरमें—फिल्मी गाना!

चाय-डिनरमें
रेस्ट्राँ घरमें
गाँव-नगरमें
तीर्थ-सफरमें—फिल्मी गाना!

नया जमाना
नया तराना
कच्चा खाना
पक्का गाना—फिल्मी गाना!

शुभ विवाहमें
या निकाहमें
बरही-छट्ठी
के उछाहमें—फिल्मी गाना!

साथ लिए शव
रघुपति राघव
स्वर्ग नरकमें
गूंज रहा रव—फिल्मी गाना !

रावणका घर,
लंकाका स्वर
रामनाम मत लो
मरने पर—फिल्मी गाना !

बच्चा गाता
बूढ़ा गाता
माता और
गर्भ शिशु गाता—फिल्मी गाना !

सुबह-दोपहर
शाम-रातभर
सपनोंमें भी
सुनते जी भर—फिल्मी गाना !

सोते-जगते
खाते-पीते
हँसते-रोते
मरते-जीते—फिल्मी गाना !

चला और कुछ इसी तरह
जो दिर-दिर ताना।
भैयाजी आबाद करेंगे
पागलखाना।

गड़ा खजाना

हम हैं सभी पुरातन प्रेमी, देश हमारा बड़ा पुराना।
पुरातत्वके पण्डित थे सब पुरखे, दादा, बाबा, नाना।
ढूहेके ध्वंसावशेषमें है संस्कृतिका ताना-बाना।
रेतीमें इतिहास छुपा है, खंडहरमें है गड़ा खजाना।
आज पुरानी पड़ी पुरानी बातें, आया नया जमाना।
नयी खोज है, नयी बात है, नया सत्य है, नया तराना।
वर्तमानमें शेष नहीं कुछ, है अतीतपर डीठ लगाई।
मुरदे गड़े उखाड़ रहे हैं, खंडहरकी हो रही खुदाई।
घाटेका है बजट बन रहा खरच हो गयी पाई-पाई।
पुरखोंका धन ढूँढ़ रहे हैं गड़ी कहीं मिल जाय कमाई।
एक ज्योतिषीने बतलाया जमी भाग्यपर थोड़ी काई।
खुरपी लिये खरोंच रहे हैं, भैयाजी यह न्याय खुदाई।
व्यर्थ हुआ श्रम, व्यर्थ खुदाई, गये पूर्वज देकर धोखा।
हीरा पन्ना, अशर्फियोंके बदले निकला सीपी-घोंघा।



मानसिंहके प्रति

मानसिंह मर गये मगर तुमने भी जितना नाम कमाया
भैयाजी कविता लिखते मर गया, पड़ोसी जान न पाया।
'मानसिंहकी जय'का नारा डाकू दलने उधर लगाया
'डाकू देश भक्त होते हैं'—डरके मारे शीश झुकाया।
तुम साधारण डाकू ही थे—हत्याएँ कीं, डाका डाला
अखबारोंने नाम तुम्हारा आसमानपर खूब उछाला।
साहित्यिक सम्मान कहाँ? लेखकने कहाँ मान पाया है
मानसिंहका मान हो रहा, भैया 'डाकू-युग' आया है।
अखबारोंके समाचार-पृष्ठोंके सतर-सतरमें डाकू
घर-बाहर, बढ़तीपर, नगर-नगरमें डगर-डगरमें डाकू।
मानसिंह मर गये मगर औलाद बहुतसी छोड़ गये तुम
नेता-साहित्यिकको भी कुछ अपने पथपर मोड़ गये तुम।
अखबारोंके काट-काट कतरन अब लेखक बन जाते हैं
चोर और डाकू भी पुस्तक लिखकर आज कमा खाते हैं।
तुम मौलिकताके कायल भैयाजी, यह साहित्यिक डाका
गबन, अपहरण, चोरी—इनका कौन बाल कर सकता बाँका।
बिचर रहे साहित्य—गगनमें निर्भय साहित्यिक चमगादर
निष्प्रयास ही मिल जायेंगे मानसिंहके बन्धु-बिरादर।
मिल-मालिक हत्याएँ करके, रुपया तुरत पचा जाता है।
और मिनिस्टरका दल डाका डाले कौन जान पाता है?
ये सफेद डाकू जो हत्याएँ करके भी सजा न पाते
सदा लूटपर मौज उड़ाते, भैया इनको शीश झुकाते।
मानसिंह तुम हो महान् जो गोली खाकर स्वर्ग (?) घर गये
तुमपर कविता लिखकर भैयाजी भी थोड़ा नाम कर गये।

—⁂—

शुरू किया जबसे क्लब जाना—

लिटरेचर ले पास किया सुश्रीसे
एम० ए० फर्स्ट डिविजन।
शादीकी मंजूरी दी थी
मैं था बी० ए० थर्ड डिवीजन।
जबसे वह घरमें आयी हैं,
बदल गया है घरका नकशा।
लगता है जैसे भैया जी
टेम्स नदीके तीर हूँ बसा।
बायरन, शेली, कीट्स सबेरे
रोज चाय पीने आते हैं।
ग्रेगरी पेक, टायरन पावर बस
उनके साथ डिनर खाते हैं।
कुछ बूढ़ी कुमारियोंने मिल
उनको ऐसा घुटा पिलाई।
शुरू कर दिया है क्लब जाना
गृह लक्ष्मी, गृह शांति गंवाई।
नया-नया जीवन दर्शन है,
नयी दृष्टि है, नया कोण है।
पति है रावण, कंस और
हिटलर है,हरिजन,काक द्रोण है।

तुलसी 'आउट आफ डेट' हैं
मनुको भैया मारो गोली।
आधुनिकाकी गीतामें
टायलेट,तलाक और जम्पर-चोली।
तीन तलाक, पाँच लव, छ
रोमांस, सात चैप्टरका नावेल।
जीवनकी नूतन परिभाषा,
खड़े द्वारपर पति ले टावेल।
माताजीको पुत्र चाहिये,
करे उजागर घर, कुल रौशन।
घरमें इधर क्लास लगता है,
सिखा रहीं परिवार-नियोजन।
भारतमें वह, दिल हालीउड,
औ दिमाग रहता लंदनमें।
'ऊब गया जी, चलो डार्लिंग,
काशी छोड़ बसें लंदनमें।'
आखिर ठहरा भारतीय पति
वह पेरिसकी गरम मसाला।
गुस्सा बढ़ा एक दिन,
सपनेमें मैंने तलाक दे डाला!

फागुन आया ।

दूर कहीं पत्तों में छिपकर काली-काली कोयल बोली
यदि मैं भी गोरी होती तो करता क्यों ऋतुराज ठिठोली
मेरी विरह-व्यथा का दुनिया वालों ने उपहास बनाया !
फागुन आया !!

बही हवा कुछ ऐसी जिससे बना आज यौवन-मन चंचल
कामदेव के झण्डे-सा फहराया सुन्दरियों का अंचल
दूर सड़क पर किसी सिनेमा लाउडस्पीकर ने गाया !
फागुन आया !!

देखो अलसा उनींदी बाला ने कैसी ली है अँगड़ाई
मनसिज ने धनुआ मोड़ा है, छूटे तीर बचाना भाई
ऋतु उदार ने बिंधे दिलों के खातिर अस्पताल बनवाया !
फागुन आया !!

रोज मिलेगी अब तो प्रेयसि के घर आइसक्रीम की दावत
काले ओठ, चाय से छोड़ो अधर जलाने की यह आदत
कोल्ड ड्रिंक, शीतल लस्सी, मुस्कान मधुर मनको है भाया !
फागुन आया !!

एक समस्या है भैया जी उनसे कैसे खेलूँ होली
लाल कपोल, अधर औ आँखे, साड़ी लाल, गुलाबी चोली
देख जिन्हें मेरी मुट्ठी में बेचारा गुलाल शरमाया !
फागुन आया !!

...

होली आयी री होली !

गली-गलीमें यौवन बिखरा, कली-कली दीवानी,
मन है बसमें नहीं मधुपको करने दो मनमानी।
यौवनकी प्यालीमें किसने मादक मदिरा घोली !
होली आयी री होली !

कलियाँ हैं मुस्कान लुटातीं फूल सुरभिके दानी,
हँसी-खुशीका पर्व—लुटाते प्यार रूप-अभिमानी।
होलीमें रूठे राजा, गुस्सेको मारो गोली !
होली आयी री होली !

यह मादक दखिनी पवन मन कुछका कुछ हो जाता,
गोरीके अंचल को आ क्यों बार-बार बिखराता।
अँगड़ाई ले संभल न पायी थी लो मसकी चोली !
होली आयी री होली !

धरतीके कण-कणमें जैसे बिखरी हो तरुनाई,
भैया चकित देख बूढ़ोंने नयी जवानी पायी।
ठूंठ रसाल डालसे कोकिल करने लगी ठिठोली !
होली आयी री होली !

फूले हैं पलाश-वन, कुंजोंमें परियोंकी टोली,
रंगरागसे भरी दिशाएँ नभपर कुंकुम-रोली।
ऐसेमें क्यों रूठे? दिलकी जला रहा हूँ होली!
होली आयी री होली!

आती और चली जाती है फिर क्यों होली आती?
एक बार ऐसी आती कि फिर यह कभी न जाती।
इन्तजारमें भैयाजीने दिल की खिड़की खोली!
होली आयी री होली!

नहीं, नहीं मैंने देखी है जहाँ सालभर होली,
नयन शराबी, गाल गुलाबी, कोयल जैसी बोली।
भैयाजी उतारकर रख दो दिल-दिमागकी खोली!
होली आयी री होली!



प्रवास

घरसे निकले, चले घूमने भैया बने प्रवासी,
बाँधा बिस्तर, छुट्टी लेकर तुरत छोड़ दी काशी।
नेहरूजीकी दिल्ली देखी भारतकी रजधानी,
अच्छी नहीं, मिल सके कहाँ भैया काशीका शानी।
दिल्लीसे हरद्वार गये और देहरादून मसूरी,
भैयाजी नापते जा रहे थे काशीकी दूरी।
पटियाला, पेप्सू, चण्डीगढ़, जम्मू औ' नौशेरा,
देखा पाक-हिन्द सीमाका भैया करके फेरा।
काश्मीरकी भूमि जहाँपर स्वर्ग उतर आया है,
जलप्रपात, सरिताएँ हैं या हीरा छितराया है।
काश्मीर सुन्दर है, सुन्दर किन्तु स्वर्गसे काशी,
काशीके आगे ठहरेगा भकुआ कौन उदासी।
मन भावे अपनी गलियाँ, मुट्ठीभर चना-चबेना,
गंगातट अपना, दुनियाका सबसे सुन्दर कोना।

काईं करें !

कविसम्मेलनका आमन्त्रण, [illegible] रेलका [illegible]
रुपयेके रथपर बैठे भैयाजी आ पहुँचे [illegible] ।

'काईं करें'—सेठजी बोले, '[illegible] उपयोग [illegible]' ?
'कविता' 'बस [illegible] नाम है [illegible]' ?

'पत्रकार भी हूँ' [illegible] पूछा, '[illegible]' ?
वेतन बतलाया - '[illegible] नौकर [illegible] ।'

'तुम्हें नौकरी दे सकता [illegible]'
कविता सुन खुश हुए सेठजी, [illegible] ।

'काम नहीं कुछ घर [illegible] मुझे [illegible]'
दिनभर है अवकाश बैठकर [illegible] ।

बिटिया भी इस साल कर रही शायद [illegible]
कुछ मेरी चिट्ठी-पत्री, बढ़ जाय [illegible] ।

एम० ए० है, तू बड़े कामका मालूम है, [illegible]
बहुत तरक्की यहाँ करेगा, [illegible] ।

वेतनका कुछ प्रश्न नहीं, जब जितना आवश्यक ले लेना
घरपर घरकी तरह रहो, छोड़ो काशीका चना-चबेना।

भैयाजीकी कविताकी यह बड़े सेठने कीमत आंकी,
भैया मुग्ध निहार रहे बांकी छवि लाला रागलला की।

कविताई करके काशीमें आधी उमर गंवाई भैया,
भैया दोनों हाथ हलोरो कलकत्तामें खूब रुपैया।

दिलपर सिल चाँदीकी, पगड़ीसे दिमाग ढक खेलो सट्टा
भैयाजीकी अपनी काशी, अपनी कविता और सिलबट्टा।

धत् तेरे कलकत्तेकी! तूने क्या समझा? यह है काशी,
लक्ष्मीपति और लक्ष्मी दोनों काशीके चरणोंकी दासी।



भैया बांदुंग चले !

तुम काशीमें भंग छानते, गाते बैठ मगन रहु चोला
चलो बांदुंग लेकर भैया अपनी बूटीका बम-गोला
नेहरूजीने भेजा है अपना स्पेशल उड़नखटोला
भूल न जाना पंच सील, लोढ़ा, बदाम, बूटी दस तोला
भैयाजी बांदुंग पहुँचे लेकर अपना एटम बम गोला
बूटी छान चले फिर सुनने सम्मेलनका बात-बतोला।
शीलयुक्त नेहरूने पहले पंचशीलका पत्रक खोला
मियां मुहम्मद लगे बेचने सप्तशील अमरीकी छोला
फिलिप, पाक, लंका, थाई थे बैठे पी रहे कोकाकोला
चुप कैसे रहते फौरन दुमकटे सियारोंने मुँह खोला
रटे सबक और बात पुरानी, सधे हुए स्वर, राग हिंडोला
जैसे 'हिज मास्टर्स वायसका' परम पालतू कुत्ता बोला।
भारतके चरणोंपर बैठा यह नन्हा-सा सेवक भोला
जान कोटले छोड़ रहा है जान बूझकर ऐटम गोला
थाई स्थायी गुलाम बन जेनरल आइकका मुँहबोला
संस्कृतिकी प्यालीमें जहरीला अमेरिकी रस है घोला

एक घूँट पीकर शैंपेनकी फिलिप शेरने बदला चोला
'साम्यवाद केवल बर्बरता'—यह अमेरिकी डालर बोला।
साम्य महासाम्राज्यवाद, आसुरी शक्ति है---एक फफोला
'जेनरल'ने कर तुला और कर्नल रोमूलोने तोला।
चाओ, नू, नेहरू, नासिरने भैया नया रेस्टरां खोला
शुद्ध शांतिका दूध पियें? मुंह लगा शैंपेन कोकाकोला।
एक ओर यह शांति युद्ध है उधर खड़े हैं हरफनमौला
जेनरल आइककी गोदीमें झूल रहे बूढ़े बाल हिंडोला।

× × ×

भारत या एशिया कहीं भी मिल जाते जयचंद-विभीषण
कर आये भैयाजी बांडुंग में चूटीपर भाषण भाषण!



भैया सब को 'फूल' बनाओ !

सब से बड़े 'फूल' ने हम को 'फूल' बना दुनिया में भेजा।
तू भी सबको 'फूल' बना कर खुद भी अपने 'फूल' बने जा।
'फूल' स्त्रियाँ तो होती ही, इन्हें नहीं कुछ लाज शरम है।
'फूल' जिसे हैं 'फूल' बनातीं वह भी किस उल्लू से कम है?
प्रथम पुरुष भी 'फूल' बना था और आज तक बनता आया।
'फूल' बनाने वाली नारी ने है केवल धोखा खाया।
ये अज्ञात यौवना कलियाँ इनको भी बस 'फूल' बना दो।
अरे खिलखिला कर हँस देंगी प्रथम ज्ञान का पाठ पढ़ा दो।
प्रोफेसर 'टेसू' को देखो ये हैं बस 'फूलों' के राजा।
इन्हें भेंट कर दो खरीद कर बड़ा पालसन डब्बा ताजा।
'फूलों' की कुछ कमी नहीं है गली-गली गेंदा-गुलाब है।
जरा चुटकियों से मसलो तो चेहरे पर रंगीन आब है।
गये एक दिन मिलने हम बंगले पर अपनी प्रियंवदा से।
फाटक पर ही मुलाकात हो गयी एक लठबंद खुदा से।
बोला—'डैम फूल बंगले पर अब मत कभी रात को आना'।
नौकर या बुलडाग गार्ड करता है अपना माल-खजाना।
मगर 'नेक्स्ट डे' प्रियंवदा जी गयीं सिनेमा साथ हमारे।
बोली—'डियर' बुरा मत मानो, नाकों दम है 'फूल' के मारे।
पति पत्नी को, पत्नी पति को, दोस्त, दोस्त को 'फूल' बनाता।
'फूलों' की यह बगिया दुनिया, खुद भी खुदा 'फूल' कहलाता।
'फूलों' की दुनिया में भैया हँसी-खुशी से जीवन काटो।
अगर सुन्दरी 'फूल' बनाये तो तुम उसके तलवे चाटो।

आगामी प्रकाशन

नयी बीबियाँ
पुराने जूते

हिन्दी में हास्यरस के नाम पर एक बड़ा शून्य देख, विरोधियों और आलोचकों की चुनौती स्वीकार कर, विद्वान लेखक ने अपनी साहित्यिक दिशा बदली और हिन्दी के अभाव की पूर्ति में लग गया। १९३२ से वह हास्य-व्यंग के गीत गा रहा है। व्यंग-गीतों के अतिरिक्त लेखक ने हास्यरस की कहानियाँ, स्केच और निबन्ध भी प्रस्तुत किये हैं। कहानियों का एक संग्रह 'मखमली जूती' के नाम से आपके सामने आ चुका है और आपने उसे पसन्द भी किया है।

नयी बीबियाँ : पुराने जूते

लेखक का नया संकलन है। आप इसे भी पसन्द करेंगे। अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लीजिये।

प्राप्ति स्थान—

चौधरी एण्ड सन्स, नीचीबाग, बनारस।